सच्ची रामायण

लेखक : पैरियर ई.व्ही. रामासामी नायकर

अनुवादक : रामअधार

प्रकाशक : **मुलनिवासी प्रचार-प्रसार केंद्र**
नागपूर

प्रकाशन तिथी : १ सेप्टबर २०११

मूल्य ₹ : ३०/-

न्यायलय क्षेत्र
नागपूर

सच्ची रामायण

(Ramayan A True Story)

लेखक

पैरियर ई.व्ही. रामासामी नायकर

मालीगाई पुथुर, टिरुचीरापल्ली-१७ मद्रास

अनुवादक

रामअधार

प्रथम हिंदी प्रकाशक

चौधरी ललईसिंह यादव

प्रकाशक

मुल निवासी प्रचार-प्रसार केंद्र

नागपूर

निर्णय सुप्रीम कोर्ट का

१) यह पुस्तक "सच्ची रामायण" उत्तर प्रदेश सरकार के गजेट दि. २०-१२-१९६९ इसवी के अनुसार जप्त हुई।

२) अपीलांट श्री ललईसिंह यादव, क्रिमिनल मिसलेनियस एप्लीकेशन नम्बर ४१२/१९७० ई. निर्णय हाईकोर्ट ऑफ जुडीकेचर इलाहाबाद दि. १९-१-१९७१ ई. के अनुसार अपीलांट श्री ललईसिंह यादव की जी हुई। अपीलांट को तीन सौ रुपये खर्च के दिये गये। जप्तशुदा पुस्तकें "सच्ची रामायण" भी अपीलांट को वापिस दी गई। फुलबैंच में माननीय सर्वश्री जस्टिस, ए.के. कीर्ति, जस्टिस के. एन. श्रीवास्तव तथा जस्टिस हरी स्वरूप थे।

३) अपीलांट उत्तर प्रदेश सरकार क्रिमिनल मिसलेनियस अपील नम्बर २९१/१९७१ ई. निर्णय सुप्रीम कोर्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली दि. १६-९-१९७६ ई. के अनुसार अपीलांट की हार हुई अर्थात रिस्पांडेण्डट श्री ललईसिंह यादव की जीत हुई। (सच्ची रामायण की जीत हुई)

फुलबैंच में माननीय सर्वश्री जस्टिस पी. एन. भगवती, जस्टिस वी. आर. कृष्णा अय्यर तथा जस्टिस मुर्तजा फाजिल अली थे।

४) श्री बनवारीलाल यादव, एडव्होकेट ने हाईकोर्ट इलाहाबाद में और श्री शिवनारायणसिंह एडव्होकेट, मकान नम्बर ई-३३ मसजिद मोठ (निअर ग्रेटर कैलाश - II) नई दिल्ली ११० ०४८, ने सुप्रीम कोर्ट में श्री ललईसिंह यादव की ओर से बहस की है। उन्हें गुणग्राही पाठकों की ओर से धन्यवाद।

श्री ललईसिंह यादव

अनुक्रमणिका

- भुमिका ६
- प्रस्तावना ७
- कथा प्रसंग १०
- रामायण के प्रमुख पात्र १४
  - दशरथ १४
  - राम १८
  - सीता २६
  - लक्ष्मण ३२
  - अन्यजन ३४
  - रावण ३९
- बंगाली रामायण ४१
  - रामायण काल के मादक पेय पदार्थ
- राम और सीता के चरित्र ४२
- वाल्मिकी रामायण ५४
- रामायण व महाभारत काव्योंपर ६१
  - श्री नेहरु के विचार
- इतिहासकारों का दृष्टिकोण ६३

भूमिका

रामायण किसी ऐतिहासिक तथ्य पर आधारित नहीं है। यह एक कल्पना तथा कथा है। इसके अनुसार राम न तो तामिलनाडु का निवासी था और न उससे किसी प्रकार सम्बन्धित था। उसके द्वारा मारा गया रावण लंका का राजा था।

राम मे तामिल-सभ्यता कण-मात्र न थी। उसकी स्त्री सीमा तामिलनाडु की विशेषताओं से रहित, उत्तर-भारत की निवासिनी थी। तामिल के मुनुष्यों को बन्दर और राक्षस कहकर उनका उपहास किया जाता है। यह बात स्त्रियों के प्रति भी है।

रामायण-युद्ध में उत्तरी भारत का कोई भी निवासी ब्राह्मण (आर्य) या देवता नहीं मारा गया।

एक शूद्र ने अपने जीवन का मुल्य इसलिये चुकाया था- क्योंकि एक आर्यपुत्र बीमार होने के कारण मर गया था। विस्तृत जानकारी के लिये 'शम्बूक-वध नाटक' पढ़िये।)

वे सब लोग जो इस युद्ध में मारे गये, आर्यों द्वारा राक्षस कहे जाने वाले तामिलनाडु के मनुष्य हैं।

रावण राम की स्त्री सीता को हर ले गया- क्योंकि राम के द्वारा उसकी बहन 'सूर्पणखा' के अहग, भंग किये गये व उसका रुप बिगाड़ा गया। रावन के इस कृत्य के कारण लंका क्यों जलाई जाये? लंका निवासी क्यों मारे जाये? इस कथा का उद्देश्य केवल दक्षिण की ओर प्रस्थान करना है। तामिलनाडु में किसी सीमा तक सम्मान के साथ इस कथा का विष-वमन अर्थात प्रचार, उपदेश तथा वहाँ के निवासियों के लिये निन्द्य तथा घिड़ोत्पादक रहा है।

राम और सीता में किसी प्रकार की कोई दैवी तथा स्वर्गीय शक्ति नहीं हैं।

इस प्रकार कथित स्वतन्त्रता प्राप्त कर चुकने के पश्चात गौराङ्गों (आर्यों) की प्रतिमायें तथा प्रसिद्धतायें उन स्थानों में ले आयी गई और आर्यों के देवताओं के नाम पर उनके नाम रख लिये गये। तामिलनाडु के जिन निवासियों की नसों में पवित्र द्रविड़ रुधिर खौलता है, उनका यह कर्तव्य है कि, वे आर्यों की उस प्रतिष्ठा तथा सभ्यता, जो तामिलनाडु के विचारों और सम्मान को दूषित करती है। (उसे) मिटा देने की शपथ लें।

- पैरियार ई.वी. रामास्वामी नायकर

प्रस्तावना

रामायण और बारतम (महाभारत) आर्य-ब्राह्मणों द्वारा चालाकी और चतुरता पूर्ण निर्मित प्रारम्भिक प्राचीन कल्पित कथायें हैं। वे द्रविड़ो (शूद्रों व महाशूद्रों) की अपनी मनुष्यता को नष्ट करने के लिये, उनकी बौद्धिक शक्ति को मलिन करने के लिये, उनके अभिमान को सदैव के लिये समाप्त कर देने के लिये, उन्हें फुसला कर अपने जाल में फंसाये रखने के लिये रची गयी हैं।

राम और कृष्ण आर्य जातियों में से 'रामायण' और 'महाभारत' के क्रमशः पात्र हैं।

पुनः ये कथायें प्रामाणिक बताई गई हैं, कि उपरोक्त रचनाओं के प्रमुख पात्र राम और कृष्ण, उनके सम्बन्धियों तथा सहायकों को अलौकिक मनुष्य एवं देवताओं की भाँति समझा जाना चाहिये और मानव मात्र के पूज्य समझकर सर्वसाधारण द्वारा पूजे जाने चाहिये।

मौलिक पुराणों का सचेत एवं सूक्ष्म अध्ययन प्रकट करता है, कि कल्पित एवं घटित वृत्तान्त और घटनायें असभ्यता पूर्ण, अशिष्ट तथा बर्बरता पूर्ण हैं। यह बात भी विचारणीय है, कि इन पुराणों में शिक्षा ग्रहण करने के लिये विशेषकर तामिलनाडु के निवासियों के लिये कोई उपयोगी तथ्य नहीं है। इन से केवल ब्राह्मणों को महानतम बताने के लिये रचे गये हैं। ब्राह्मणों के मिथ्या सिद्धान्तों को और 'मनु' की धर्मसंहिता को मानने को बाध्य करने के लिये रचे गये हैं। जो कि मानव-मात्र के लिये अपमान जनक हैं। इन पुराणों का कल्पित सिद्धांत राम और कृष्ण की लीला को जबरन अनन्त सिद्ध करते हैं।

मौलिक पुराण संस्कृत भाषा में रचे गये हैं। वे पुराण आर्यों को उनकी बौद्धिक योग्यतानुसार, भिन्न भिन्न समयों की स्थिती विशेषानुसार विभिन्न काल्पनिक तथ्य को, उन लोगों को सन्तुष्ट करने के लिये बताते हैं, जिनके बीच वे उपदेश दिया करते थे। वे (आर्य) इनको 'वेद' कहते हैं। ये पवित्र वैदिक-धर्मशास्त्र हैं, जो कि उपदेश देते हैं कि मनुष्य को कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिये। ये आर्य इन पौराणिक कथाओं का वेदों का सार 'पाँचवा वेद' आदि न जाने क्या क्या कहते हैं। इस सफेद झूठ के द्वारा छल प्रपञ्च से प्राप्त हुई, अपनी उस असत्य महत्ता को, जिसके कि वे अधिकारी नहीं हैं, बनाये रखना चाहते हैं। इतना कहकर इतनी सफेद झूठ बोलकर भी वे यहीं पर साँस नहीं लेते, उन्होंने इन कल्पित कथाओं को धर्म में पुरोड़ दिया है और वे उन्हें (पुराणों को) धर्म-स्तम्भ बताते हैं, जिनपर आर्यों का धर्म टिका हुआ है, ऐसा कहकर न केवल जनसाधारण को, बल्कि शिक्षित वर्ग को भी बेवकूफ बना

कर ठगा गया है, उन्हें धोखा दिया गया है, इन कहानियों को महत्वपूर्ण, उपयोगी और पवित्र बताकर उनको बचपन से ही मनुष्य के रुधिर में इन्जेक्शन की भांति समाविष्ट कर दी जाती हैं।

तामिलनाडु में नब्बे प्रतिशत लोग अशिक्षित हैं। अपने को शिक्षित माननेवाले शेष दस प्रतिशत लोग अन्धविश्वासी हैं कि वे अपने स्वतंत्र विचार ही नहीं व्यक्त कर सकते हैं। वे द्रविड़ आर्यों के द्वितीय संस्कार (स्वर्ग) में विश्वास करते हैं और इसी कपोलकल्पित विश्वास के दुष्परिणाम-स्वरूप आर्यों के चिर दास बने हुये हैं, वे द्रविड़ इन पुराणों में आर्यों द्वारा वर्णित, इन आज्ञाओं को मानते चले जा रहे हैं, संक्षेप में मुसलमानों और ईसाइयों के अतिरिक्त ये सभी (द्रविड़ लोग) रामायण के धार्मिक भक्त हैं।

इन पुराणों में वर्णित दुराचारपूर्ण प्रवृत्तियों, उद्देशों और उल्लंघनीय -आज्ञाओं का भण्डा-फोड़ करना आवश्यक हो गया है- ताकि (केवल) तामिलनाडु के निवासी ही नहीं-बल्कि आर्यों द्वारा कहे जाने वाले (सम्पूर्ण) भारत के द्रविड़ शूद्र (शूद्र व महाशूद्र) अपना दृढ़ विचार रख सकें। और आर्यों के धर्म रूपी छूट से अपने आपको मुक्त कर सकें।

इस परिणाम को दृष्टि में रखते हुये, कि भविष्य में रामायण के पाठकों का समय अब इन कपोलकल्पित तथ्यों को पढ़ने में नष्ट न हो बल्कि एक सौ चालीस पृष्ठ की वार्तालाप के रूप में प्रकाशित 'रिमकी रामायण कन्वरशेशन' (अंग्रेजी) में वर्णित रामायण के संक्षिप्त और महत्वपूर्ण तथ्य, जो-कि विचारों को कम न करते हुये लिखी गई है, पढ़नी चाहिये।

हम लोग उन घटनाओं में विश्वास नहीं करते जो किसी समय में हुई प्रमाणित की गई हैं। वे घटनायें वस्तुतः किसी समय न घट सकी थी। तब इस कथा, उपकथा या प्रासंगिक कथा का इतना अनुसन्धान क्यों किया जाता है? यह बस क्यों?

इसलिये कि मैं साधारण के समक्ष अपने विचारों को रखता हूँ। विशेष कर भारतीय द्रविड़ों (शूद्रों व महाशूद्रों) के समक्ष जिन को आर्य लोग उपदेश देते हैं, प्रचार करते हैं और बहुत समय पूर्व उन्होंने हमारे आदमियों द्वारा ख्याति प्राप्त कर ली है। मूल रामायण में कोई प्रशंसनीय तत्व नहीं है, न कोई उपदेशात्मक। कण्ठाग्र करने योग्य तथा अनुकरणीय नहीं है- जो कि तर्कसंगत हो। हमारे आदमियों द्रविड़ों (शूद्रों व महाशूद्रों) की आंखे खोलना चाहिये और आर्यों को जन्म से ही दूसरे से विशिष्ट होने तथा दूसरे द्वारा सम्मानित होने में सहायक होगी।

यहाँ पर हम लोग आर्यों के ईश्वर को साकार रूप देने, देवताओं, ऋषियों,

कथा प्रसंग

रामायण की घटनायें और कथा-क्रम बहुत कुछ अरबी पौरा 'मदन कामराज' और पञ्चतन्त्र नामक पुस्तकों के समान कल्पित हैं। वे मानवमात्र की समझ और गूढ़ विचारों से दूर है। इसके फल-स्वरूप यह दृढ़तापूर्वक कहा जा सकता है कि, रामायण कोई वास्तविक कथा नहीं है। कोई भी कह सकता है, कि केवल अनोखी बातों और कल्पित स्वर्ग तथा ईश्वर द्वारा भोले-भाले अशिक्षित पुरुषों पर अपनी स्वार्थ पूर्ण बातों का प्रभाव डाला जा सकता है किन्तु कोई भी समझ सकता है, कि रामायण में प्रणित तत्व निराधार, निरर्थक और अनावश्यक है! तथापि उन परिस्थितीयों में जिसमे सद्गुण, दूरन्देश, करुणा तथा शुभेच्छाओं की शिक्षा जिस असत्य तथा निर्मूल रूप मे दी गई है, मानवशक्ति तथा समझ परे है, जब कि इस बात पर अत्याधिक जोर दिया गया है कि, रामायण का प्रमुख पात्र 'राम' मनुष्य रूप में स्वर्ग से उतरा और उसे ईश्वर समझा जाना चाहिये। वाल्मिकी ने स्पष्ट कहा है, कि राम विश्वासघात, छल, कपट, लालच, कृत्रिमता, हत्या, आमिष-भोजी और निर्दोष पर तीर चलाने की साकार मुर्ति था। आगे पाठक स्पष्ट देखेंगे, कि राम तथा उसकी कथा में कोई स्वर्गीय शक्ति नहीं है और उसके विषय में वर्णित गुण मानवमात्र की समझ से बाहर है तथा वे तामिलनाडु के निवासियों एव भारत के समक्ष शूद्रों के लिये शिक्षा प्रद एवं अनुकरणीय नहीं हैं।

कथा श्रोत

रामायण की कथा न तो धर्म-संगत है, न चेतन प्राणी के लिये उपयुक्त है। देवताओं ने चतुर्मुख ब्रह्मा से शिकायत की कि, "राक्षस लोग हमारे यज्ञो मे विघ्न डालते हैं।" ब्रह्मा ने यह बात अपने पिता विष्णु से कही। विष्णुने राम के रूप में पृथ्वी पर अवतार लेने तथा राक्षसों के राजा रावण को मारने का निश्चय किया। यह रामायण की कथा का श्रोत (प्रारंभ) है।(बाल काण्ड १५ वा अध्याय)

विष्णु ने पृथ्वी पर अवतार धारण करने के पश्चात बहुत से कष्टों, यातनाओं का अनुभव किया-जिनके कारणों को आर्यों के पवित्र पुराण वर्णन करते है। वे कारण ये है कि -

विष्णु ने पहिले बहुत से दुराचार पूर्ण घृणित और अमानवीय कार्य किये

थे। जिसके दण्ड और दुष्परिणाम स्वरूप उसे उन ऋषियों, मुनियों द्वारा शाप दिये गये- जिनके प्रति उसने अपराध किये थे। ये शाप क्यों? क्योंकि उस विष्णु ने (विरुद्ध) मुनि की स्त्री को मार डालने का घृणित पाप किया था।

उस (विष्णु) ने मनुष्यों के समक्ष दिन दहाड़े जालन्धर की स्त्री का सतीत्व छल तथा कपट से लूटा था।

कदाचित क्या यह सब लीला दिखाने के लिये? पुराणों में इस प्रकार की सैकड़ों घृणात्मक कहानियाँ पाई जाती हैं। ये कथायें जैसी भी हो। हम उन्हें छोड़ कर यह देखना चाहिये, कि देवता और असुर कौन है? यज्ञों का अर्थ क्या है? और ईश्वर होते हुये भी विष्णु चोरी, हत्या व व्यभिचार जैसे घृणित कार्यों का दास कैसे बन गया? क्या इन घृणित कार्यों के कर्ता को ईश्वर समझा जाना चाहिये? ये कार्य कब और कहाँ किये गये? कल्पित स्वर्ग में या मृत्यु-लोक में ? देवताओं का निवासस्थान कहाँ? मृत्यु लोक में यज्ञ करने क्यों आये? क्या मदिरा पिये हुये मदवालों के साथ वेद-मंत्रों का उच्चारण करते हुये, छल-कपट-पूर्ण उपायों द्वारा बेचारे जानवरों को मार कर, उनका गोश्त खाना ही यज्ञ की परिभाषा है?

इन बातों से क्या यह कहा जा सकता है कि परमात्मा इन देवताओं व यज्ञ के कर्ता अन्य मनुष्यों से प्रसन्न होता है और उन्हें उच्च पद व शुभ फल देता है? क्या गुंगे जानवरों के प्रति की जाने वाली इस प्रकार की निर्दयता को रोका जाना पाप है? अधर्म है? क्या परमात्मा के पक्ष में इन निर्दयी हत्यारों का देवता व यज्ञों का देवता व यज्ञों के रोकने वालों का राक्षस कहा जाना उचित है? विद्वान पाठकों को इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये।

आज कल मादक पदार्थों का खाना व पीना और पशुओं के प्रति निर्दयता का व्यवहार करना, जनता एवं राज्य दोनों के द्वारा कारागार तथा जुर्माना दोनों प्रकार से दण्डनीय अपराध है। क्या इन अपराधों का रोका जाना रावण काल में उचित नहीं था? रावण शिव का भक्त था और जैसा कि एक भक्त के लिये उचित है, कि चाहे शिव के राज्य में अकाल पड़ जाये-किन्तु वह अपने राज्य में होनेवाले जानवरों के वध सम्बन्धी निर्दयतापूर्ण यज्ञों को अपनी आज्ञा तथा कानुन से बन्द कर दे। क्या यह उचित है, कि ईश्वर रावण जैसे राजा के वंश देश-प्रजा का नाश करने के लिये अवतार ले? क्योंकि वह अमानवीय कार्यों को होने देने से रोकता था। इन बातों पर विचार करने से पता चलता है, कि रामायण बेहुदगी, अनर्थकता और मुर्खता से परिपूर्ण है।

रामायण के बाल काण्ड नामक प्रथम अध्याय में वर्णन किया गया है, कि अयोध्या का राजा दशरथ पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से यज्ञ करने का विधान बना रहा था। उस यज्ञ में भेड़, घोड़े, चिड़ियाँ व सर्प जैसे अण्डज व पिण्डज पशुओं का वध करने के लिये संग्रह, किया गया था। कितनी भयानक बात है, कि एक पिता बनने के केवल अपने स्वार्थ सिद्ध होने की आशा से इन पशुओं का वध किया जाये! क्या यह सहन करने योग्य बात है, कि यज्ञ की अग्नी में असंख्य जीव बलि दिये जा चुकने के पश्चात ईश्वर ने उसे पुत्र होने का वरदान दिया। क्या देवता ऐसे वध से प्रसन्नता का अनुभव कर सकते थे? इन देवताओं का 'इन्द्र' नामक अपना राजा था। पुराणों में इन्द्र की जिस दुष्टता घृणित तथा मिछोरपन की बातों का वर्णन किया गया है, उससे आर्यों की सभ्यता व चरित्र का पता चलता है।

यज्ञ का विषय क्या है? रामायण के बाल काण्ड के १४ वें अध्याय के अनुसार दशरथ की रानियों में से कौशल्य यज्ञ के लिये संकल्प किये गये एक घोड़े का सिर काटकर मरे हुये घोड़े के साथ चिपटी हुई सम्पूर्ण रात पड़ी रही। यदि यही आर्यों का ईश्वरीय धर्म है। तो हम उनके मानव धर्म के विषय में विचार कर सकने में असमर्थ है। इतना ही नहीं -यदि कोई योगशास्त्र के अनुसार और अपने विचारों के अनुसार यह सोचे कि यज्ञ क्या है? तो यह उसके मस्तिष्क और शरीर को दहला देने वाले घृणित कार्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।

कुन्दी अरसु प्रेस में प्रकाशित पुस्तक 'म्वाना सूर्यान' में उस यज्ञ का घृणित वर्णन किया गया हैं। यज्ञ का सम्पादन करने के लिये उसके सम्पादनार्थ शुल्क के रूप में राजा दशरथ ने अपनी सुमित्रा व कैकई नामक राणियों के साथ अपनी प्रथम राणी कौशल्या को भी अपने तीनों पुरोहितों को भेट कर दी। इन तीनों पुरोहितों ने अपने पाश्विक स्वभावानुसार तीनों राणियों के साथ न्याय करके अर्थात उनके साथ विषय भोग कर के उन्हें राजा दशरथ को वापिस कर दीं और राजा दशरथ ने इस पर कोई आपत्ति नहीं की। (बाल काण्ड १४ अध्याय) इसके पश्चात रानियाँ गर्भवती हो गई।

मन्मथनाथ दातार अपने अंग्रेजी अनुवाद में लिखते हैं, कि 'होता' 'अदवर्यु' और 'युवग' नामक तीनों पुरोहितों से अपनी राणियों के साथ सम्भोग करने की प्रार्थना की। इन उपायों से पुत्र प्राप्त करने के लिये यज्ञ क्यों? यदि वे अपनी भावनाओं के अनुसार इस पर विचार करें-तो पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगी कि योगशास्त्र और पुराणों के अनुसार सम्पादित यज्ञ की रिती पुत्रों का जन्म

का कारण न बन सकी होगी। बल्कि राजवंशिय तीनों रानियों के गर्भवती होने के वास्तविक कारण तीनों पुरोहित मात्र थे।

'कम्बा रामायण' के अनुसार निम्न तथ्य पुष्टीकरण हेतु पर्याप्त है, कि जिस समय दशरथ यज्ञ कर रहा था- उस समय उसकी अवस्था साठ वर्ष की थी और उसके साठ हजार स्त्रियाँ थी। स्पष्ट है कि,उस समय दशरथ शक्तिहीन वृद्ध था! वह केवल माया का पुत्र था। सन्तानोत्पत्ति करने की शक्ति बिना एक ऐसे वृद्ध मनुष्य का स्त्रियों के लिये मतवाला या पागल होना, उन्हें फुसलाना, तथा उनमें काम शक्ति पैदा करना स्वाभाविक नहीं है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि, अपनी अवस्था के सन्ध्या-काल में डगमगाने और लड़खड़ानेवाले इस शक्ति-हीन वृद्ध द्वारा वर्षों से बन्ध्या चली आयी ये तीनों स्त्रियाँ क्या यज्ञ के दूसरे दिन गर्भवती हो सकती हैं? तीनों पुरोहितों ने अपनी इच्छानुसार उन्हे तीनों रानियाँ भेंट कर दी गईं और तत्पश्चात तीनों पुरोहितो ने अपने अभिलाषित समय तक उनके साथ यथेच्छा सम्भोग कर के उन्हें राजा दशरथ को वापिस कर दी। फलस्वरूप राजा ने तीनों पुरोहितों को इच्छित-शुल्क (दान-दक्षिणा) दिया।

कौन कह सकता हैं, कि तीनों स्त्रियों के गर्भवती होने का कारण राजा था? राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न यदि राजा दशरथ से पैदा न होकर कथित पुरोहितों द्वारा पैदा हुये-तथापि आर्यधर्म के अनुसार कोई दोष या पाप न हुआ। यह बात उनके शास्त्रों में लिखी है, यदि कोई ब्राह्मण स्त्री नि:सन्तान है- तो वह निश्चित दशाओं में किसी दूसरे आदमी से सन्तान उत्पन्न कर सकती है। इस बात के प्रमाण तथा समर्थन के लिये आर्यों की दूसरी पुस्तक महाभारत देखी जा सकती है। बिना यज्ञ के बहाने अपने परिवार सम्बन्धों से मातायें बन गई थी। धृतराष्ट्र व पाण्डु इसी कोटि की सन्तानें थी। महाभारत में इस प्रकार के बहुत से जन्म पढ़ने को मिलते हैं।

सीता को प्राप्त करने के लिये सीता की माता ने किसी अपरिचित मनुष्य से सम्भोग किया था, उत्पन्न बच्चे को एक जंगल में फेंक दिया था। सीता ने स्वयं स्विकार किया है, कि मेरे माता पिता के अज्ञान होने के कारण मेरा विवाह विलम्ब से हुआ है।

पुराणों में एक विचित्रता और पढ़ी जाती है, कि कई स्त्रियों ने मनुष्यों से नहीं, बल्कि जानवरों से भी गर्भधारण किये थे।

इन बातों से प्रकट है, कि सन्तान उत्पन्न कर सकने में 'यज्ञ' का कोई

महत्व तथा शक्ति नहीं है- बल्कि यह इच्छित आनन्द, उत्सव, मनाने, शराब पीने और गोश्त खाने के साधन -मात्र थी।

अब हम रामायण की विशेषताओं पर ध्यान दें-जैसा कि हम उसमें पढ़ते हैं।

रामायण के प्रमुख पात्र

दशरथ

यज्ञ के पश्चात हमें दशरथ के द्वारा राम-राज्याभिषेक की तैयारी की ओर दृष्टि डालनी होगी। इस सम्बन्धित अध्याय में राजा दशरथ की स्त्रियों, पुत्रों, मन्त्रियों और गुरुओं की धर्माचरण सम्बन्धी निचता का वर्णन किया गया है।

१ - कैकेई से ब्याह करने के पहले दशरथ ने उससे प्रतिज्ञा की थी, कि उससे उत्पन्न पुत्र को अयोध्या की राजगद्दी दी जायेगी। कुछ कथाओं में वर्णन किया गया है, कि ब्याह के समय दशरथ ने अपना राज्य कैकेई को सौंप दिया था और दशरथ उसका प्रतिनिधी मात्र होकर शासन करता था।

२. - डॉ. सोमसुन्द्रा बरेथियर एम.ए.बी.एल. की अपनी पुस्तक 'कैकयी की शुद्धता और दशरथ की नीचता' में मौलिक कथा की कलई खोली गई है।

3. - राजा दशरथ के उक्त प्रभाव से राम और उसकी मां कौशल्या अनभिज्ञ न थी। वृद्ध राजा ने राम को प्रकट रुप से बता दिया था, कि राम राज्यतिलकोत्सव के समय कैकई के पुत्र भरत को अपने नाना के घर चला जाना शुभ संकेत है। दशरथ ने भरत को उसके राज्याधिकार से च्युत रखने की निचता-पूर्ण उद्देश्य से उसे उसके नाना के यहाँ दस वर्ष तक रखा था। (अयोध्या काण्ड १४ अध्याय) अयोध्या में बिना कभी वापिस आये दस वर्ष के दीर्घ काल तक भरत को अपने नाना के यहाँ रहने की कोई आकस्मिक आवश्यकता नहीं थी। 'मन्थरा' के चरित्र के विषय में वाल्मीकी लिखते हैं, कि 'दशरथ ने अपनी पूर्व सुनिश्चित योजनानुसार भरत को अपने नाना के यहां भेज दिया था। भरत का अयोध्या राजधानी में शिघ्र उपस्थित उसे (भरत को) अयोध्या निवासियों की सहानुभूति प्राप्त करने में असमर्थ बना देती। दशरथ की यह भी धारणा थी, कि भरत को (यदि ठीक राज्यभिषेक के) समय पर उसके नाना के यहा पठवा देने में मुझे दशरथ की लोगों से शत्रुता बढ़

जावेगी।"

४ - एक दिन पूर्व ही दशरथ ने अगले दिन राम राज्याभिषेक की झूठ घोषणा कर दी थी।

५ - यद्यपि मन्त्री वशिष्ठ व अन्य गुरु-जन भली भांति और स्पष्टतया जानते थे, कि भरत राज गद्दी का उत्तराधिकारी है- तो भी चतुर, धूर्त व ठग लोग राम को गद्दी देने की मिथ्या हामी भर रहे थे।

६ - राम की माता कौशल्या भी अपनी देवी देवता मनाया करती थी कि, मेरे पुत्र राम को राजगद्दी मिले ।

७ - पुरोहितों व पण्डितों को सूचना तथा उनके परामर्श के बिना और कैकई, जनक, भरत एवं शत्रुघ्न आदि को बिना आमंत्रित किये दशरथ ने राज-तिलक का शीघ्र प्रबन्ध कर दिया।

(अयोध्या काण्ड प्रथम अध्याय)

८ - दशरथने रामसे गुप्त रूपसे कहा था, कि यदि भरत के लौट आने के पहिले भरत की अनुपस्थिति में ही भरत के लिये राज-तिलकोत्सव स्थगित कर देने की स्थिति उत्पन्न हुई तो मैं दशरथ इस बात को बिना किसी विरोध के शान्तिपूर्वक स्वीकार कर लूंगा, क्योंकि भरत उदार व अच्छी प्रकृति का है और सज्जन होने के नाते जो कुछ पहिले हो जावेगा। वह उसे स्विकार कर लेगा।

(अयोध्या काण्ड १४ अध्याय)

९ - कैकई ने हठ किया, कि उसका पुत्र राजा बनाया जावे और इसकी सुरक्षा का विश्वास दिलाने के लिये राम को वनवास दिया जावे-तो दशरथ उसे मनाने के लिये उसके पैरों पर गिर पड़ा उससे प्रार्थना करने लगा, कि "मैं तुम्हारी इच्छानुसार कोई भी तुच्छतम कार्य करने के लिये तैयार हूँ। राम को बनवास भेजने का हठ न करें।"

(अयोध्या काण्ड १२ अध्या.)

१० - दशरथ ने कैकेई से कहा कि, "तुमने पूर्व आयोजित सभी प्रयत्न विफल कर दिये, "उसने इस सम्बन्ध में कैकेई से एक शब्द भी नही कहा कि "राम मेरा प्रथम पुत्र होने के कारण राजगद्दी का सही वास्तविक उत्तराधिकारी है।" जब अन्त में दशरथ के कैकेई को मनाने के सभी प्रयत्न निष्फल हो गये- तब दशरथ ने राम को अपने पास बुलाया और उसके कानों में धुपके से कहा, "मेरा कोई वश न

चला सकने के दुष्परिणाम-स्वरूप अब मैं भारत को राज-तिलक करने को तैयार हो गया हूँ। अतः तुम्हारे ऊपर कोई बन्धन नहीं है। तुम मुझे गद्दी से उतार कर अयोध्या के राजा हो सकते हो।

११ - सभी प्रयत्न निष्फल हो चुकने के पश्चात दशरथ ने 'सुमन्त्र को आज्ञा दी, कि कोषागार का सम्पूर्ण धन, खातियों का अनाज, व्यापारी, प्रजा व वेश्यायें राम के साथ वन को भिजवाने का प्रबन्ध करो।

(अयोध्या काण्ड ३६ अध्याय)

१२- कैकेई ने इस पर भी आपत्ती प्रकट की और विवादास्पद तर्क उपस्थित करते हुये दशरथ को असमंजस मे डाल दिया कि, 'तुम केवल देश चाहते हो-न की उसकी संपूर्ण संपत्ती। (अयोध्या काण्ड ३६ अध्याय)

१३ - दशरथ ने कोषागार में रखे हुये सम्पूर्ण आभुषण सीता को सौंप दिये।

१४ - राम और सीता को बनवास भेजने के कारण घबड़ाकर दशरथ ने कैकेई के ऊपर गालियों की बौछार की-किन्तु दशरथ को राम के साथ लक्ष्मण को बनवास भेजने में कोई बेचैनी नहीं हुई। लक्ष्मण की स्त्री का कोई वर्णन नही हैं।

स्वर्गीय श्री सी.आर. श्रीनिवास आयङगर ने सन १९२५ ई. में प्रकाशित वाल्मीकी रामायण का संस्कृत से तामिल भाषा में अपने अनुवाद 'अयोध्या काण्ड पर टिप्पणी' नामक पुस्तक (के द्वितीय एडीशन) में लिखा हैं, कि दशरथ स्वात्मघाती था। दशरथ ने सुमित्रा व कैकेई के कार्यो पर हस्ताक्षर कर दिये थे। लेखक ने दशरथ पर बीस दोषारोपण किये हैं :

(१) दशरथ ने बिना विचार किये हुये कैकेई को दो वरदान देने की भूल की।

(२) कैकेई के विवाह करने के पूर्व दशरथ ने उससे उत्पन्न पुत्र को राजगद्दी देने की भूल की।

(३) साठ वर्ष का दीर्घ समय व्यतीत कर चुकने के पश्चात भी अपने पशुवत विचारों का दास बने रहने के दुष्परिणाम स्वरूप अपनी प्रथम स्त्री कौशल्या तथा द्वितीय स्त्री सुमित्रा के साथ वह व्यवहार न कर सका-जिसकी वे अधिकारिणी थी।

(४) कैकेई को दिये गये मूर्खतापूर्ण वचनो ने उससे कैकेई को खुशामद कराई।

(५) अपनी प्रजा के समक्ष राम को राजतिलक करने की घोषणा कैकेई व उसके पिता को दिये वचनों का उल्लंघन है।

(६) कैकेई की स्वेच्छानुसार उसे दिये गये वरदानों के फल-स्वरूप राम को गद्दी देने की अपनी पूर्ण घोषणा से वह निराश हो गया।

(७) इन पापों ने दशरथ द्वारा भरत को राजगद्दी देने के असम्भव वचनों को निरस्त कर दिया।

(८) वशिष्ठ ने परामर्श दिया था कि, इक्ष्वाकु-वंशीय-परंपरानुसार परिवार के ज्येष्ठ पुत्र को राज-गद्दी मिलनी चाहिये-किन्तु कैकेई के प्रेम में पागल दशरथने उस परामर्श को लात की ठोकर मार कर अलग कर दिया।

(९) दशरथ को अपनी मूर्खता का प्रायश्चित करना तथा कुछ मूल्य चुकाना चाहिये था-किन्तु उल्टे उसने कैकेई को श्राप दिया।

(१०) वह भूल गया कि, मैं कौन व क्या हूँ तथा मेरी स्थिती क्या है और कैकेई के पैरों में गिर पड़ा।

(११) सुमन्त और वशिष्ठ जो दशरथ के वचनों से अवगत थे। कैकेई के प्रति किये गये वचनों की ओर संकेत कर सकते थे, दशरथ को सचेत कर सकते थे, राम को राजगद्दी न देने का परामर्श दे, सकते थे-किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।

(१२) वशिष्ठ ने जो कि भविष्यवक्ता थे, राम राज्य-तिलकोत्सव के शुभ अवसर को शिघ्रतासे निश्चय कर दिया-यद्यपि वह भलीभांती जानता था कि यह योजना निष्फल हो जायेगी।

(१३) कैकेई, अपना न्याय-संगत स्वत्व एवं अधिकार मांगती थी। किन्तु सिद्धार्थ सुमन्त व वशिष्ठ उसे विपरीत परामर्श देने उसके पास दौड़ गये। इस पर निष्फल होने पर उन्होंने उसे फटकारा।

(१४) राम वन जाने के पहिले दशरथ अपनी प्रजा व ऋषियों की अनुमति ज्ञात कर चुका था, कि राम वन को न जावे-फिर भी उसने दूसरों की कोई चिंता किये बिना राम को वनवास भेज दिया। यह दूसरों की इच्छा का अपमान करना तथा घमण्ड है।

(१५) इसीलीये अपमानित प्रजा व ऋषियों ने इस विषय में न कोई आपत्ति की और न राम को वन जाने से रोका।

(१६) राम अपनी उत्पत्ति तथा दशरथ द्वारा भरत को राजगद्दी देने के, कैकेई के प्रति किये गये वचनों को भली भांति जानता था- तथापि यह बात बिना पिता के बताये मौन रहा और राज-गद्दी का इच्छुक बना रहा।

(१७) दशरथ ने रामसे कहा कि "हमारे सभी प्रबन्ध और कार्यक्रम निरस्त हो जायें। दूसरे भरत उदार, सरलहृदय, धर्मात्मा तथा बुद्धिमान है। भरत को अपने नाना के यहा गये बहुत समय हो गया है। दृढ़ तथा निश्चय विचारवाले परदेशी व्यक्ति का भी मस्तिष्क परिवर्तित हो सकता है।" अतः दशरथ का यह विचार था कि भरत के आने के पहिले ही राम-राज्य तिलकोत्सव समाप्त हो जाये (अयोध्या काण्ड ४ अध्याय। इसप्रकार भरत को अपना उचित अधिकार प्राप्त करने मे धोखा दिया गया और चुपके से राम को राज तिलक करने का निश्चय किया। राम ने भी इस षड्यन्त्र का चुपचाप स्विकार कर लिया।

(१८) जनक को आमन्त्रण न दिया था- क्योंकि कदाचित भरत को राजगद्दी दे दी जाती-तो राम के राज्याधिकार होने के कारण वह असन्तुष्ट हो जाता।

(१९) कैकेई के पिता को निमन्त्रण न दिया गया था क्योंकि यदि भरत के प्रति किये बचनों को न मानकर यदि राम को गद्दी दे दी जाती- तो वह नाराज हो जाता।

(२०) इन्हीं उपरोक्त कठिनाइयो के कारण अन्य राजाओं को राम राजतिलकोत्सव मे नही बुलाया गया था। कैकेई व मन्थरा के उचित कार्यों तथा अधिकारों के विषय में पर्याप्त तर्क हैं। बिना इन पर विचार किये हुये कैकेई आदि पर दोषारोपण करना उन्हें गाली देना न्याय-संगत नहीं है।

राम

अब हमें राम और उसके चरित्र के विषय मे विचार करना चाहिये।

१ - राम इस बात को भली-भांति जानता था, कि कैकेई के व्याह के पूर्व ही अयोध्या का राज्य कैकेई को सौंप दिया गया था, यह बात राम ने स्वयं भरत को बताई। -(अयोध्या काण्ड १०७ अध्याय)

२ - राम को अपने पिता, कैकेई व प्रजा के प्रति सर्व-प्रिय व्यवहार, अच्छा स्वभाव एवं शील केवल राजगद्दी को अन्याय से छीन लेने के लिये

(दिखावटी) था। इस प्रकार राम सब की आस्तिन का साँप बना हुआ था।

३ - भरत की अनुपस्थिति में अपने पिता द्वारा राजगद्दी मिलने के प्रपञ्चों से राम स्वयं सन्तुष्ट था।

४ - कहीं ऐसा न हो कि राजगद्दी मिलने के मेरे सौभाग्य के कारण लक्ष्मण मुझ से ईर्षा तथा द्वेष करने लगे इस बात से डर कर, राम ने लक्ष्मण को फाँस कर उससे मीठी बातें बना कर उससे कहा, कि मैं केवल तुम्हारे लिये राज गद्दी ले रहा हूँ- किन्तु अयोध्या का राज्य वास्तव में तुम्ही करोगे।" अन्त में (राजा बन जाने के बाद राम लक्ष्मण से राजगद्दी के विषय में कोई सम्बन्ध नहीं आया।

-(अयोध्या काण्ड ४ अध्याय)

५ - राज तिलकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाने में राम के हृदय आद्योपान्त सन्देह बना रहा था।

६ - जब दशरथ ने राम से कहा, कि "राजतिलक तुम्हें न किया जायेगा तुम्हें बनवास जाना पड़ेगा-तब राम ने गुप्त रूप से शोक प्रकट किया।

-(अयोध्या काण्ड १९ अध्याय)

७ - उसने शोक प्रकट करते हुये अपनी माता से कहा था, कि "ऐसा प्रबन्ध किया गया है, कि मुझे राज्य से हाथ धोना पड़ेगा। राज्य-वंशीय-भोग-विलास व स्वादिष्ट-गोश्त की थालियाँ छोड़ कर मुझे बनवास जाना होगा और बन के कन्द-मूल-फल खाने पड़ेंगे।"

- (अयोध्या काण्ड २० अध्याय)

८ - उसने भारी हृदय से अपनी माता व स्त्री से कहा था, कि "जो गद्दी मुझे मिलनी चाहिये थी, वह मेरे हाथों से निकल गई और बनवास जाने के लिये मेरा प्रबन्ध किया गया है।"

-(अयोध्या काण्ड २०,२६,५४ अध्याय)

९ - उसने लक्ष्मण के पास आकर पिता को दोषी तथा दण्डनीय बताते हुये कहा कि, "क्या कोई ऐसा मूर्ख होगा जो अपने उस पुत्र को बनवास दे-जो सदैव उसकी आज्ञाओं का पालन करता रहा हो।"

(अ.काण्ड ५३)

१० - राम ने बहुत सी स्त्रियों के साथ विवाह किया था। यह बात श्री. आर. श्रीनिवास आयङ्गार द्वारा सन १९२५ ई. प्रकाशित-रामायण के अनुवाद

के द्वितीय संस्करण में पाई जाती है (अयोध्या काण्ड ८ अध्याय, पृष्ठ ४८) राम ने सीता के साथ केवल रानी बनाने के लिये विवाह किया था। श्री मन्मथनाथ दातार लिखते हैं, कि "आनन्द लेने के लिये राम की स्त्रियाँ नौकरों की स्त्रियों का साथ किया करती थी। राम की स्त्रियों का वर्णन रामायण के अनेक स्थलों पर आया है। इस प्रकार राज-वंशीय नियमानुसार राम ने अपनी विषयिक इन्द्रिय का आनंद लेने के लिये कई दूसरी स्त्रियों के साथ विवाह किया था।

११ - यद्यपि राम के प्रति कैकेई का प्रेम सन्देहयुक्त न था। किन्तु राम का प्रेम कैकेई के प्रति कपटी और बनावटी था।

१२ - राम कैकेई प्रति स्वाभाविक एवं सच्चा होने का बहाना करता रहा और अन्त में उसने कैकेई पर दुष्ट-स्त्री होने का आरोप लगाया।
-(अयोध्या काण्ड, ५३ अध्याय)

१३ - यद्यपि कैकेई दुष्टतापूर्ण तथा नीच विचारों से रहित थी- तथापि राम ने उस पर दोषारोपण किया, कि वह मेरी माता के साथ निचता-पूर्ण व्यवहार कर सकती है। -(अयोध्या काण्ड ३१,५३ अध्याय)

१४ - वह मेरे बाप को मरवा सकती है। इस प्रकार उसने कैकेई पर दोषारोपन किया। -(अयोध्या काण्ड ५३ अध्याय)

१५ - वनवास में जब कभी राम को निकट भविष्य में दु:खपूर्ण-समय से सामना करना पड़ा- तो उसने यही कहा, कि अब कैकेई की इच्छा पूर्ण हुई होगी, अब वह सन्तुष्ट हुई होगी।

१६ - राम ने लक्ष्मण से वनवास में कहा था, कि चुंकि हमारे बाप वृद्ध व निर्बल हो गये हैं, और हम लोग यहां आ गये हैं अब भरत अपनी स्त्री सहित बिना किसी विरोध के अयोध्या पर शासन कर रहा होगा। इस बात से उसकी राजगद्दी और भरत के प्रति ईर्षा की स्वाभाविक तथा निराधार अभिलाषा प्रकट होती है। -(अयोध्या काण्ड, ५३ अध्याय)

१७ - अब कैकेई ने राम से कहा, "हे राम! राजा ने मुझे तुम्हारे पास तुम्हें यह बताने के लिये भेजा है, कि भरत को राज-गद्दी मिलेगी और तुम्हें वनवास।" तब राम ने उससे कहा, कि राजा ने मुझ से यह कभी नहीं कहा कि, "मैं भरत को राजगद्दी दूंगा। -(अयोध्या काण्ड, १९ अध्याय)

१८ - उसने अपने पिता को मूर्ख और पागल कहा था। -(अयोध्या काण्ड,५३)

१९ - उसने अपने पिता से प्रार्थना की थी, कि "जब तक मै बनवास से वापिस न लौट आऊं-तब तक तुम अयोध्या का राज्य करते रहो और किसी को गद्दी पर न बैठने दो।" इस प्रकार उसने भरत के सिंहासनारुढ़ होने मे अड़चन लगा दी। - (अयोध्या काण्ड, २४ अध्याय)

२० - राम ने यह कह कर सत्यता व न्याय का गला घोंटा, कि "यदि मुझे क्रोध आया-तो मैं स्वयं अपने शत्रुओं को मार कर या कुचल कर स्वयं राजा बन सकता हूँ, किन्तू मै यह सोच कर रुक जाता हूँ, कि प्रजा मुझसे घृणा करने लगेगी।" -(अयोध्या काण्ड, ५३ अध्याय)

२१ - उसने अपनी स्त्री सीता से कहा, कि "तुम बिना भरत की रुचि समझे हुये उसके लिये भोजन बनाती हो, यह बाद मे हमारे लिये बहुत लाभदायक होगा।" -(अयोध्या काण्ड, २६ अध्याय)

२२-राम के बनवास चले जाने का समाचार सुनकर भरत उसे अयोध्या लौटा लाने के लिये बन मे उसके पास गया। भरत को देखकर राम ने उसने प्रश्न किया, कि "हे भरत! क्या तुम प्रजा द्वारा खदेड़ भगाये गये हो?क्या तुम अनचिछा से हमारे बाप कि सहायता करने आये हो?"

-(अयोध्या काण्ड, १०० अध्याय)

२३ - राम ने भरत से पुनः कहा, कि "अब तुम्हारी माँ का मनोरथ सिद्ध हो गया होगा, क्या वह प्रसन्न है?" (अयोध्या काण्ड,१०० अध्याय)

२४ - भरत ने राम को विश्वास दिलाया, कि "मैंने सिंहासन प्राप्त करने के स्वत्व को त्याग दिया है।" -तब राम ने रहस्योद्घाटन करते हुये भरत को बताया कि, "दशरथ अयोध्या का राज्य पहिले, ही तुम्हारी माँ को सौंप चुका है।" (अयोध्या काण्ड,१०७ अध्याय)

२५ - भरत बन में अयोध्या की राजगद्दी राम को सौंप कर और उसकी खड़ाऊं लेकर अयोध्या वापिस लौटा, उसने उन्हे सिंहासन पर रखकर चौदह वर्ष तक एक तपस्वी का जीवन व्यतीत किया, भरत इस चिंता मे क्षीण-काय हो गया-कि राम चौदह वर्ष के पश्चात भी अयोध्या में वापिस न आयेगा। अत: उसने चिता मे जलने की तैयारी की।

राम ने ऐसे सच्चे व्यक्ति पर सन्देह किया, राम चौदह वर्ष बनवास भोग चुकने के पश्चात जब वापिस अयोध्या के किनारे आया-तब उसने भरत को यह सूचित करने के लिये (सर्व-श्रेष्ठ योद्धा) हनुमान को उसके पास भेजा,

कि "अब मैं (राम) एक विशाल सेना लेकर विभिषण एवं सुग्रीव सहित आ गया हूँ।" इस समाचार को सुनकर भरत के मुखारविन्द पर पड़े हुये प्रभाव व सभी प्रकार के भोग तथा प्रसन्नता से परिपूर्ण अयोध्या को त्याग कर उसके (राम के) पास शिघ्र चल देने की बात पर ध्यान दीजिये- क्योंकि सभी प्रकार के भोगोपभोग और सर्व-सुख-सम्पन्न अयोध्या को छोड़कर तत्काल (राम के स्वागत हेतु) चल देना अति दुष्कर कार्य है। -(अयोध्या काण्ड, १२७ अध्याय)

२६ - राम सीता के चरित्र पर सन्देह करता रहा और अग्नि-परीक्षा देकर उससे अपने सतीत्व को सिद्ध करने को कहा। राम की व्यवस्थानुसार सीता को यह कष्ट सहन करना पड़ा। तो भी राम ने सीता को गर्भवती पाया। अतः सीता के सतीत्व का संदेह प्रजा की चर्चा का विषय बना रहा। सीता के सतीत्व के संबंध में प्रजा के इस प्रकार के विचार के कारण उसी समय सीता को वन में छोड़ देने के अपने निर्णय को बिना सीता को बताये उसे गर्भवती दशा में ही जङ्गल मे छुड़वा दिया था।

२७ - जब वाल्मीकि ने सीता के पवित्र सतीत्व के विषय में दृढ़तापूर्वक राम से कहा - तो भी राम को विश्वास नहीं हुआ और सीता को पृथ्वी के अन्दर समा जाना पड़ा।

२८ - यह जानते हुये भी, कि सुग्रीव व विभिषण अपने भाईयो को मार कर राजगद्दी पर अधिकार कर लेने के उद्देश्य से उसके पास आये है- फिर भी राम ने उन (स्वार्थियो) से मित्रता कर ली।

२९ - उसने विश्वासघाती भाई की भलाई के लिये उस बलि को छिप कर मारा जिसने पीठ पीछे भी राम का अहित नहीं किया था। उस राम की -जो बलि के सामने का साहस नही कर सकता था, मूर्ख ब्राम्हणों द्वारा अत्याधिक प्रशंसा की गई है- वह भी उसे एक शूर-वीर मान कर।

३० - विभिषण द्वारा उसकी (राम की)अधीनता स्विकार कर लेने पर भी अज्ञानतावश राम ने अपनी बुरी भावनाओं तथा-छल-कपट को प्रकट कर दिया। राम ने भरत की प्रशंसा की, कि "भरत चाहे कितना दुष्ट व पापी क्यों न हो -किन्तु उसके सदृश्य बडे भाई का आज्ञाकारी तथा धर्म-भक्त कोई नही है।" इस प्रकार राम ने व्यङ्गात्मक ढङ्ग से भरत को दुष्ट कहा। -(अयोध्या काण्ड, १७ अध्याय)

३१ - बालि को मारते हुये अपने इस कार्य को न्यायोचित बताते हुये राम ने

उस (बालि) से व्याख्या की- "कि , जहाँ तक जानवरो का सम्बन्ध है, वहां धर्म का विचार नहीं करना चाहिये।" तो भी राम ने बालि को इस कारण मारा कि वह चेतन जीवन के समान व्यवहार नहीं करता था। बालि के प्रति आरोपित दोषों के प्रति उसे कुछ भी कहने का अवसर नहीं दिया गया। रामने बालिको पूर्णतया सुग्रीव के स्वार्थपूर्ण कथनानुसार मारा।

३२ - राम ने बहुत सी स्त्रियो के कान, नाक, स्तन इत्यादि काट कर उन्हें कुरूप बना दिया था और उन्हें बहुत यातनायें दी। (शूर्पणखा और अयामुही)

३३ - राम ने बहुत सी स्त्रियो को मार डाला था। (ताड़का और ग्रहणाई)

३४ - राम ने कई अवसरो पर स्त्रियों को गालियाँ दी।

३५ - राम ने स्त्रियों के प्रति ऐसा कहते हुये उन्हें अपमानित किया कि, "उन पर विश्वास नहीं करना चाहिये। उन्हें गुप्त भेद नहीं बताना चाहिये।"
-(अयोध्या काण्ड, १०० अध्याय)

३६ - राम हमेशा अनुचित विषयभोग में तल्लीन रहता था।

३७ - राम ने अनावश्यक-रूप से कई जीवो को मारा व उन्हें खा गया।

३८ - राम ने कहा था कि, मैं केवल राक्षसो को मारने के लिये वन गया था। दूसरे "मैंने राक्षसों के संहार करने का दूसरो को वचन दिया था। -(अयोध्या काण्ड,१० अध्याय)

३९ - राम ने राक्षसो को लड़ाई में लाने का निश्चय किया और सीता के विरोध करने पर भी उसने रावण के देश में प्रवेश किया।-
(अरण्य काण्ड,९ अध्याय)

४० - कुम्भकरण से लड़ते हुये राम ने कहा कि, "लोगो से प्रेरित होकर मैं केवल राक्षसो का बध करने हेतु वन मे आया हूँ।
(अरण्य काण्ड,२९ अध्याय)

४१ - स्वार्थपूर्ण उद्देश्य से राम ने अयोग्य एवं कपटी सुग्रीव को स्वयं ही आत्मसमर्पण कर दिया कि, "मुझे स्वीकार करो। मुझ पर दया करो।"

४२ - यह जानते हुये की विभिषण ने अपने भाई रावण को धोखे से पकड़ा दिया है- फिर भि राम ने विभिषण का पक्ष किया। (युद्ध काण्ड,१७)

४३ - लंका का राज्य पहिले सेही विभिषण को देने का वचन देकर राम ने

अङ्गद को रावण के पास यह सूचना देने के लिये भेजा था, कि "यदि रावण सीता को लौटा देगा- तो मै लंका पर चढ़ाई नहीं करूंगा और लंका उसके लिये छोड़ दूंगा।" (युद्धकाण्ड, १८ अध्याय)

इससे यह सिद्ध है, कि रावण अन्य प्रत्येक प्रकार से निर्दोष था। वह अविश्वसनीय नहीं था।- (युद्ध काण्ड, ४० अध्याय)

४४ - भरत, कैकेई, प्रजा व गुरु आदि सभी बन मे राम के पास गये और राम से अयोध्या लौट चलने का सत्याग्रह किया किन्तु कठोर हृदय राम ने उत्तर दिया कि "मैने अपने पिता के बचनो का पालन करने का निश्चय कर लिया है और मैं किसी का कहना न मानूगा।" इस प्रकार उसने लौटने से इनकार कर दिया और उसी राम ने अपने पिता के बचनो का तिरस्कार करके अयोध्या का राजा बनना स्वीकार कर लिया। (दशरथ के प्रति भरत राज-गद्दी देने का बचन)

- (युद्ध काण्ड, १३० अध्याय)

४५ - राम ने केवल गद्दी प्राप्त करने का इच्छुक था-बल्कि वह अपने पिता के बचनों के अनुसार बन जाने के समय से ही, पिता के बचनों का पालन करते हुये बन मे रह कर, अयोध्या लौटने पर स्वयं राजा बनना चाहता था। राम को गद्दी पर बैठने की आशा, चिन्ता तथा इच्छा के अतिरिक्त न था। राम ने समय समय पर ये विचार अपनी बातचीत मे प्रकट किये।

४६ - शूद्र होकर तपस्या करने के कारण राम ने शम्बुक का कत्ल किया। (उत्तर काण्ड, ७६ अध्याय)

४७ - एक साधारण मनुष्य की भांति राम-लक्ष्मण को एक नदी (गुप्तार घाट पर शरयू नदी) मे फेंक कर स्वयं (उसी) नदी में गिर कर मर गया। (उत्तर काण्ड, १०६ व ११० अध्याय) तत्पश्चात राम ने उपेन्द्र (विष्णु) के रूप मे अवतार लिया।

४८ - संस्कृत श्लोक मे वर्णन है कि, राम ने अपने दाहिने, हाथ को सम्बोध करते हुये कहा कि "क्या तू राम का अङ्ग नहीं है? तू ने बिमार ब्राह्मणपुत्र को जीवित करने के लिये एक निर्दोष-शूद्र (शम्बूक) का बिना किसी हिचकिचाहट के निर्दयतापूर्वक बध कर दिया।"

संकेत : यदि आज राम सदृश्य राजा होते-तो शूद्र कहे जाने वाले लोगों की (उपरोक्त घृणित कार्य को देख कर या सुन कर) क्या मनोदशा होती?

४९ - राम ने जो धनुष्य तोड़ा था। वह शिव का था और वह पहिले से ही टूटा था। (देखिये "अभिनवहंस चिंतामणि" नामक पुस्तक के पेज १५७, ३३१, ५७१, ६६३, ८९४, ११५१, ११७२, ११९४)

५० - विभिन्न रामायणों और परशुराम के द्वारा समर्थन किया गया है। जब राम ने धनुष तोड़ा था- उस समय राम की अवस्था माता कौशल्या के अनुसार पांच वर्ष, पिता दशरथ के अनुसार दस वर्ष और उसकी स्त्री सीता के अनुसार बारह वर्ष की थी। कुछ भी हो विभिन्न कथाओं के अनुसार धनुष्य पहिले से ही टूटा था।

डाक्टर सोमसुन्दा बरेथियर का दृष्टिकोण

वाल्मिकी-रामायण के अनुसार राम कोई धार्मिक व्यक्ति न था। उसका अनेकों कपटपूर्ण कार्यों में हाथ था।

राम इस बात को पूर्णतया जानता था कि अयोध्या, के राज्य का वास्तविक अधिकारी मैं (राम) न होकर भरत ही उस राज्य का कानून से अधिकारी है।

राम के पिता दशरथ ने भरत की माता कैकेई से विवाह करने के पूर्व ही उसे वचन दे दिया था, कि "कैकेई के उत्पन्न पुत्र को ही अयोध्या का राजा बनाया जायेगा।" केवल इसी शर्त पर कैकेई के पिता ने दशरथ को कैकेई दी थी।

राम ने स्वयं भरत से इस बात का संकेत किया था और राम ने भरत से प्रार्थना की थी-कि वह अपनी माँ पर दोषारोपण न करे।

उक्त बात राम की मा, ऋषियों गुरु व मंत्रियों को विदित थी।

संक्षेप में राम माता, ऋषि, गुरु व मंत्री अयोध्या की राजगद्दी को भरत से छिन कर उसे राम को दिलाने में दशरथ के घृणित व कपटपूर्ण षड्यंत्र के सह अपराधी थे।

आबेल मेनन नामक एक अमेरिका निवासी के प्रकाशित उसी समाचार पत्र के अनुसार रामायण

अमेरिका निवासी व्याख्या करता है कि, "शिकागो गैड गस्टर" प्रकृति का राम और रावण नामका राक्षस द्वारा ले जाये में प्रसन्न सीता तुच्छ हृदय की बालिका थी। देखिये बीस नवम्बर सन उन्नीस सौ चौवन ईस्वी वाल्यूम नम्बर १३, जिल्द नम्बर २६३, पृष्ठ २ का सोवियट यूनियन नामक समाचार पत्र।

सीता

आओ! अब हम सीता के चरित्र का निरिक्षण करें। सम्पूर्ण रामायणमें मुश्किल से एक शब्द सीता की प्रशंसा में लिखा गया है -

१ - वह राम की अपेक्षा आयु में बड़ी है। उसका जन्म सन्देह जनक और आपत्तियुक्त था। (अयोध्या काण्ड, ६६अध्याय)

२ - वह कहती है कि, "मै धूल में पायी गई-इसलिये मेरे माता पिता न होने के वजह से बहुत दिनों तक कोई मुझ से प्रेम करने को तैयार न होने के कारण मेरी अवस्था बड़ी हो गयी।

३ - विवाह हो जाने के पश्चात कुछ समय बाद वह भरत द्वारा अलग कर दी गयी।

४ - राम ने सीता को बताया कि "तुम भरत द्वारा प्रशंसा की पात्र नहीं हो। -(अयोध्या काण्ड, २६ अध्याय)

५ - सीता ने राम को स्वयं बताया कि "मैं उस भरत के साथ नहीं रहना चाहती, जो मुझ से घृणा करता हैं।

६ - वह अपने पति (राम) को सिड़ी तथा मूर्ख कहा करती थी।

७ - वह राम से कहती थी कि "तुम मानवीय-गुणों से रहित मनुष्य हो।"

८ - "तुम आकर्षण-शक्ति तथा हाव-भाव से रहित हो।"

९ - "तुम उस स्त्री व्यापारी से अच्छे नहीं हो-जो अपनी स्त्री को किरायेपर उठाकर जिविका चलाता हो-तुम मुझ से लाभ उठाना चाहते हो।"

१० - सीता ने यह जानकर कि, राम हमेशा मेरे चरित्र के विषय में सन्देह किया करता है। सीता ने कहा "राम! तुम मुझे बचानेवाले हो, मैं केवल तुम्हारे प्रेम के अतिरिक्त किसी के प्रेम पर विश्वास नहीं करती हूँ, मैंने इस बात को कई बार तुम्हारी शपथ खा कर कहा - तथापि तुम मुझपर विश्वास नहीं करते।"

११ - राम ने कहा "मैं तुम्हारी परीक्षा कर चुका हूँ।" (अ.का.६ से ११ अ.)

१२ - राम ने सीता को ठाठ-बाट और नीचता का स्मरण कर सीता से कहा, कि "तुम्हे अपने आभुषण उतार देने चाहिये- यदि तुम मेरे साथ बनवास चलना चाहती हो।" -(अयोध्या काण्ड,३० अध्याय)

१३ - सीता ने राम के कथनानुसार ही किया- किन्तु अन्य आभुषण पहने रही। (अयोध्या काण्ड, ३९ अध्याय)

१४ - कौशल्या जो कि सीता के चरित्र को जानती थी, सीता को एक सज्जन तथा सुचरित्रवती महिला की भांती आचरण करने को कहा, "कभी अपने पति को अपमान न करना।" सीता ने अपनी सास को असभ्यता-पूर्ण उत्तर देते हुये कहा कि, "मैं यह सब जानती हूँ" और उसने अपने आभूषण नहीं उतारे। - (अयोध्या काण्ड, ३९ अध्याय)

१५ - जब राम और लक्ष्मण वल्कल-वस्त्र (पेड़ो की छाल के कपड़े) धारण किये हुये थे। तब सीता ने ऐसे वस्त्र पहिनने से इन्कार कर दिया। -(अयोध्या काण्ड, ३७ अध्याय)

१६ - दूसरी स्त्रियों ने जो सीता के वन जाने की अनिच्छा से अवगत थी, सीता के प्रति दयालुता प्रकट की और उसे अपने साथ न ले जाकर यहीं (अयोध्या में) छोड़ देने की राम से प्रार्थना की, तो भी राम ने सीता को छाल के कपड़े पहिनने के लिये बाध्य किया और उसे वन में साथ ले गये- जैसा कि कैकेई दूसरी स्त्रियों के विचारों से सहमत न थी। - (अयोध्या काण्ड, ३७,३८ अध्याय)

१७ - तथापि सीता ने दिये गये सम्पूर्ण परामर्शों की ओर ध्यान न दिया। उसने सुन्दर वस्त्र और आभूषण पहिने। इससे स्पष्ट है कि भरत सीता से घृणा करता था और यह कि कैकेई यह न चाहती थी, कि सीता अयोध्या में रहे। सीता को वन ले जाने के यही उपरोक्त कारण है।

१८ - बनवास जाते समय नदी (गङ्गा) पार करते हुये सीता ने गंगा नदी से प्रार्थना की थी, कि "हे नदी गंगा! यदि मैं सकुशल अयोध्या लौट आऊंगी- तो मैं तुम्हें हजारों गाय और मदिरा (शराब) से परिपूर्ण बर्तन चढ़ाउंगी। (अयोध्या काण्ड, ५२ अध्याय)

१९ - बनवास में जब किसी सीता निकट भविष्य के खतरे से भयभीत होती-तो वह मन में कहा करती कि, मेरे दुःखों से कैकेई प्रसन्न और सन्तुष्ट होती होगी। इसप्रकार व कैकेई से अपनी शत्रुता प्रकट करती थी।

२० - जब कभी राम सीता को न देख कर उदास होता, तो लक्ष्मण कहा करता कि "तुम एक साधारण स्त्री के लिये क्यों परेशान होते हो। -(अयोध्या काण्ड, ६६ अध्याय)

२१ - लक्ष्मण कहा करता था, कि सीता का चरित्र आपत्ति जनक है। -(आरण्य काण्ड, १८ अध्याय)

२२ - राम हिरन की खोज में बाहर गया था। सीता राम की सहायता के

लिये लक्ष्मण को तैयार कर रही थी। सीता ने देखा कि लक्ष्मण मुझे अकेला छोड़ कर जाने मे हिचकिचाता है। तब सीता ने लक्ष्मण पर बुरा प्रभाव डालते हुये कहा कि "राम के जीवन को बचाने मे लापरवाही करके मुझे फुसलाने के लिये तुम यहा देर कर रहे हो। क्या तुम राम के सच्चे भक्त होकर वन मे आये हो (अर्थात नहीं) तुम लुच्चे तथा दगाबाज हो। तुम मेरे साथ भोग विलास करने के उद्देश्य से राम को मार डालने के लिये आये हो। क्या भरत ने इसी उद्देश्य से तुम्हे हम लोगों के साथ भेजा है? मै तुम्हारी तथा भरत की इच्छा को कभी पूरा न होने दूंगी।"

२३ - जब लक्ष्मण ने सीता के प्रति मातृवत सम्मान प्रदर्शित करते हुये, सीता से कहा कि "तुम्हे ऐसी निर्लज्जता प्रकट करना शोभा नही देता हैं। तब उसने लक्ष्मण से कहा, "तुम स्वावलंबी हो, तुम मेरे साथ आनन्द करने के लिये साथ विश्वासघात करते हो और इस प्रकार तुम मेरा सतीत्व नष्ट करने के लिये अवसर ढूंढ रहे हो।" (उपरोक्त दोनों संकेत अयोध्या काण्ड के ४५ वें अध्याय में देखे जा सकते हैं।

२४ - रावण ने सीता को ले जाने के उद्देश्य से उसकी मनोस्थिती को बड़े ध्यान से देखा। उसकी सुन्दरता को देख व उसके ऊपर मोहित हो गया और उसकी और बढ़ा। वह उसके स्तनो और जादूभरी आँखो की प्रशंसा करने लगा। इन सब बातों से सीता की क्या प्रतिक्रिया हुई होगी? क्या सीता ने रावण से घृणा की? क्या उसे अस्विकार किया? क्या उसने उसे फटकारा? नही, बिल्कुल नहीं। रावण की इस समय सम्मान पूर्ण आगवानी की गई (स्वागत किया गया) बिना अपनी अवस्था अधिक प्रकट किये, उसने रावण के समक्ष अपने सुन्दर यौवन की प्रशंसा की। -(आरण्य काण्ड, ४६,४७ अध्याय)

२५ - जब रावण ने सीता को बताया कि "मै राक्षसों का प्रधान रावण हूँ। तब सीता ने उससे घृणा की।

२६ - जब रावण उसे अपनी गोद मे लिये जा रहा था- तब वह अर्धनग्न थी। तब वह स्वयं अपने स्तन खोले हुये थी।

-(आरण्य काण्ड,५४अध्याय)

२७-२७-जैसे ही उसने अपने पैर रावण के महल में रखे। सीता का रावण के प्रति आकर्षण उत्तरोत्तर बढ़ता गया। -(आरण्य काण्ड, ५५ अध्याय)

२८ - रावण ने अपने यहा सीता से कहा कि, "आओ हम दोनों मिल कर आनन्द (सम्भोग) करें।" तब सीता अझोन्मिलित आंखों-युक्त सिसकती भरती रही। -(आरण्य काण्ड,५५अध्याय)

२९ - रावण ने कहा "हे सीते! हमारा तुम्हारा मिलन ईश्वरकृत है। यह ऋषियों की भी भाया है।" -(आरण्य काण्ड,५५अध्याय)

३० - सीता ने कहा, "तुम मेरे अङ्गो का आलिगन करने के लिये स्वतन्त्र हो। मुझे उसकी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं। मुझे इस बात का पश्चाताप नही, कि मैंने भूल की है।" (आरण्य काण्ड, ५६ अध्याय) इससे इस परिणाम पर पहुंचा जा सकता है, कि सीता ने रावण को अपने साथ दुर्व्यवहार करने की अपनी (स्पष्ट) अनुमति नहीं दी।

३१ - राम ने सीता से कहा कि, रावण ने तुम्हे बिना तुम्हारा सतीत्व नष्ट किये कैसे छोड़ा होगा। राम द्वारा इस दोषारोपित सीता ने निम्नांकित उत्तर दिया- जो कि उपरोक्त कथन की पुष्टि करते।

३२ - सीता ने उत्तर दिया कि "तुम सत्य कहते हो- किन्तु तुम्ही बताओ, कि मै क्या कर सकती थी? मैं केवल अबला हूँ। मेरा शरिर उसके अधिकार में था। मैंने स्वेच्छा से कोई भूल नही की है- तथापि मैं मन से तुम्हारे निकट रही हूँ। ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी।" सीता ने केवल इतना ही कहा- किन्तु सीता ने दृढतापूर्वक यह नहीं कहा, कि 'रावण ने मेरा सतीत्व नही भङ्ग किया।

-(युद्ध काण्ड, ११८ अध्याय)

३३ - सीता का गर्भ देख कर राम का सन्देह और पुष्ट हो गया। उसने प्रजा द्वारा सीता के प्रति लगाये गये आरोपो की शरण ली और उसने जंगल में छोड़ देने की लक्ष्मण को आज्ञा दी, तब सीता ने लक्ष्मण को अपना पेट दिखाते हुये कहा, कि "देखो मैं गर्भवती हूँ।

(उत्तर काण्ड, ४८ अध्याय)

३४ - जंगल में उसने दो पुत्रो को जन्म दिया। (उत्तर काण्ड ६६ अध्याय)

३५ - अंत मे जब राम ने इस सबन्ध मे सीता से शपथ खाने को कहा तो अस्विकार करते हुये वह मर गई।- (उत्तर काण्ड, १७ अध्याय)

३६ - रावण ने सीता को सिर झुका कर बड़े सम्मानपूर्वक अपनी ओर आकर्षित होकर कहा, इसका तात्पर्य यह है, कि रावण ने सीता के

प्रति अपनी किसी शक्ति का प्रयोग नहीं किया-बल्कि सीता स्वयं उस पर मोहित हो गई थी। सीता ने रावण की विषयेच्छा का स्वयं अनुसरण किया था, रावण पर मोहित न होने की दशा में वह सीता को छू तक नहीं सकता था- क्योंकि रावण को श्राप दिया गया था कि यदि व किसी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध छुएगा-तो वह भस्म हो जायेगा। अतः रावण ने किसी भी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध न तो छुआ न कभी छू सकता था।

३७ - रावण से सीता को वापिस प्राप्त कर के तथा उसे अपनी स्त्री के रुप में पुनः स्वीकार कर के राम अयोध्या में राज्य कर रहा था। उसकी साली 'कुकवावती' ने राम के पास आकर कहा, की "श्रेष्ठ! तुम अपने की अपेक्षा सीता को कैसे अधिक प्यार करते हो? मेरे साथ आओ और अपनी प्यारी सीता के हृदय की वास्तविकता को देखो वह अब भी रावण को नहीं भूल सकी है, वह रावण के ऐश्वर्य पर गर्व करती हुई, उसका चित्र अपने बिजन (पंखा) पर बनाये हुये, उसे अपनी छाती पर चिपकाये हुये, अर्द्धोन्मिलित नेत्र-युक्त अपनी चारपाई पर लेटी हुई है।"

इसी समय राम के 'दुर्मुहा' नामक एक गुप्तचर ने राम के निकट आकर उसे बताया, कि "रावण के यहा से सीता को लाकर पुनः अपनी स्त्री बना लेना प्रजा में तुम्हारी निन्दा और उपहास का विषय बना हुआ है"। यह सुनते ही राम तिलमिला गया और उसे क्रोध आ गया। उस समय राम को मन ही मन अपने अपमान और दुःख का अनुभव हुआ- जो कि उसके चेहरे से प्रकट होता था। उसने आहे भरी और अपनी साली के साथ सीता के कमरे में गया राम ने सीता को अपने बिजन पर रावण का चित्र बनाये हुये, उसे अपनी छाती पर चिपकाये हुये, सोती हुई पाया। (यह बात 'श्रीमती चन्द्रावती' द्वारा लिखित 'बंगाली रामायण' के पृष्ठ १९९ और २०० में पाई जाती है।)

घटनाओं के गम्भीर अध्ययन से प्रकट होता है, कि राम ने सीता में उसके गर्भवती होने मे दोष पाया, राम ने रावण के यहां से सीता को वापिस लाकर पुनः उसे अपनी स्त्री के रुप में स्विकार कर के अयोध्या वापिस आने के ठीक एक महिने के अन्दर, राम द्वारा सीता के गर्भवती होने का समय हो सकता है।

३८ - श्री सी.आर. श्रीनिवास आयङ्गार की 'रामायण पर टिप्पणी' नामक

पुस्तक के अनुसार राम ने सीता को रंगे हाथों पकड़ा था। क्योंकि उसने रावण का चित्र खींचा था।

३९ - रामायण के अनुसार हम कह सकते है, कि राम एक अयोग्य व्यक्ति था और सीता एक व्यभिचारिणी स्त्री थी।

राम ने सीता को अकेले जंगल मे छुड़वाया, इसके प्रमाणस्वरूप बहुत से दृष्टान्त है।

जहां तक सीता का सबन्ध है, रावण के साथ अनुचित-संसर्ग करने के कारण धर्मनीति के अनुसार पवित्र नही थी। यदि राम कृत्य उचित मान लिया जाये-तो यह सभी को स्विकार कर लेना चाहिये, की सीता रावण द्वारा गर्भवती हुई थी।

यदि यह मान कर, कि सीता ने कोई नैतिक अपराध नहीं किया था-वह राम के द्वारा गर्भवती हुई थी, सीता की रक्षा की जाये-तो यह सभी को स्विकार कर लेना चाहिये कि राम द्वारा अबोध गर्भवती को जंगल में अकेले छुड़वाने का कार्य मानवोचित नहीं है। रामने सीता के गर्भ के विषय में अन्वेषण किया था-तब ही उसने दूसरे दिन प्रातःकाल उसे जंगल में छुड़वा दिया था।

ऐसी दशा में यह सिद्ध करना, कि न तो सीता भ्रष्ट थी और न राम गुण्डा तथा विश्वासघाती प्रकट करता है, कि यह भ्रष्टता और नीचता क्षम्य नहीं है।

तब यह कथन कैसे सत्य कहा जा सकता है, कि राम ने आर्य-धर्म-नित्यानुसार मानवमात्र को उपदेश देने के, हेतु तथा सीता ने स्त्री-मात्र को सदाचरण तथा सतीत्व की शिक्षा देने के निमित्त अवतार लिये।

यदि ब्राह्मणों के इस उपदेश का प्रतिपादन करनेवाले दृष्टिकोण को अपनाया जाये कि, राम और सीता ने जो कुछ किया था-वह उचीत ही है- तो क्या यह बेचारे अबोध व बुद्धिहीन मानव-मात्र को पथ-भ्रष्ट करना नहीं है? सुधाकर इस मुर्खता-पूर्ण हास्यास्पद मत को कैसे सहन कर सकते है? इन कारणों से हम अधिकारपूर्वक कह सकते है, कि :-

"राम और सीता चरित्रहीन थे"

सीता का गर्भवती होना

वाल्मिकी-रामायण का गम्भीर तथा सूक्ष्म अध्ययन स्पष्ट करता है, कि सीता राम द्वारा गर्भवती हुई नहीं थी।

राम रावण को मार कर, सीता को साथ लाकर, अयोध्या लौटकर, तिलकोत्सव के पश्चात अयोध्या पर राज्य करने लगा, तब सुग्रीव, विभिषण और अन्य लोगों को अपने स्थान पर वापिस भेज दिया। पुष्पक विमान के चले जाने के पश्चात शिघ्र ही भरत ने दोनों हाथ जोड़ कर राम से कहा, "हे नाथ! तुम स्वर्गीय-शक्ति हो। तुम्हारे शासन के एक मास के अन्दर ही प्रजा सब प्रकार से आनन्दित तथा सन्तुष्ट है।

कहा गया है कि, दस हजार वर्ष शासन कर चुकने के पश्चात एक समय राम और सीता प्रसादीय-उद्योग में बैठे हुये थे। उस समय उस (राम) ने देखा, कि सीता गर्भवती है। श्रीनिवास आयंगर द्वारा वाल्मीकि रामायण का अनुवाद किया है। उनके द्वारा अनुवादित रामायण के 'शासन के दस हजार वर्ष पश्चात' श्लोक को उत्तर काण्ड के श्लोक (नम्बर ४२ पृष्ठ १६३) देखिये। वे अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में लिखते हैं, कि यह श्लोक स्वयं वाल्मिकि द्वारा नहीं रचा गया है- बल्कि बाद बाद में जोड़ दिया गया है।

वाल्मिकि रामायण के बाल काण्ड अध्याय २ चरण प्रथम के अनुसार राम ने सीता को जंगल में छुड़वा देने के पश्चात दस हजार वर्ष राज्य किया। उसने बहुत से अश्वमेध यज्ञ भी किये। (देखो उत्तर काण्ड,९९ अध्याय) यह कहा गया है कि, यह श्लोक सीता को उसकी सन्देह जनक स्थिति में त्राण देने के लिये घुसेड़ दिया गया है। इस पर सीता एक महीने के अन्दर गर्भवती पाई गई और उसे लक्ष्मण को अपना पेट दिखाते हुये कहा था कि,"देखो यह गर्भ चार महीने का है" और उसने लक्ष्मण को अभिवादन करते हुये विदा ली। यदि यही मान लिया जाये- तो एक महीने गर्भ को चार महीने का गर्भ कैसे मान लिया जाये? या यह कि यह गर्भ यम (संयम, नियम या जादू) द्वारा हुआ होगा।

लक्ष्मण

जहां तक लक्ष्मण का सम्बन्ध है, हम उसके चरित्र में कोई अपूर्व तथा अलौकिक बात नहीं पाते हैं। रामायण में अनेक स्थलों में लक्ष्मण का वर्णन केवल इसलिये किया गया है, कि सदैव राम के साथ रहा। इस बात का वर्णन कहीं नहीं मिलता कि, उसमें कोई अलौकिक शक्ति थी। बड़े आश्चर्य की बात है, कि उसे भी (शेष-नाग के) अवतार का पद दिया गया।

१ - भरत से राजगद्दी छीनने के षड़यंत्र में उसका हाथ था।

२ - राम ने अपने प्रति लक्ष्मण की भक्ति पर सन्देह करके, उसे छल पूर्वक फुसलाया था, कि, 'राजतिलक मुझे होगा-किन्तु अयोध्या का राज

वास्तव में तुम्हीं करोगे।" यह सुनकर वह राम के राज-तिलक में प्रत्येक प्रकार से तन-मन से जुट गया। सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने क्रमशः राम और भरत का पक्ष लिया- क्योंकि वे जानते थे कि, कदाचित हम दोनों को राजगद्दी मिलने कि है।

३ - लक्ष्मण ने अपने बाप दशरथ को गालियाँ देते हुये, उसे बुराभला तथा विश्वासघाती कहा।

४ - उसने प्रस्ताव रखा , कि "हमारे बाप को कारागार में डाल दिया जाये।"

५ - उसने कहा की "हमारे बाप को मार डाला जाये।"

६ - उसने कहा कि मनु के अनुसार पिता को मार डालना धर्म है।

७ - उसने कहा कि, "मैं भरत मित्रों को बिल्कुल मिटा दूंगा।"

- (अयोध्या काण्ड २१ अध्याय श्लोक नम्बर ३ से ७ तक देखें।)

८ - राम आहें भर रहा था, कि ईश्वर की कृपा ऐसी ही थी कि राजा नहीं हो सका। यह देखकर उसने राम की आलोचना की कि केवल कायर और मूर्ख ईश्वर की इच्छा के विषय में बात किया करते हैं।

९ - लक्ष्मण ने राम को बताया कि, मैं "तुम्हें धोखा देने के लिये दशरथ और कैकेई ने अपनी पूर्व सुनिश्चित योजनानुसार, तुम्हें राजगद्दी देने में भिन्न भिन्न मतों को अनुसरण किया है।

१० - उसने ललकार कर राम से कहा, कि "मैं दशरथ और कैकेई को वन में भेज सकता हूं और तुम्हें राजगद्दी पर बैठा सकता हूं।"

११ - उसने राम से कहा कि, यदि तुम अपना राजतिलक नहीं चाहते हो तो मैं राजगद्दी पर अधिकार करके अयोध्या का राज करूंगा।

- (अयोध्या काण्ड, २३ अध्याय श्लोक नं. ८ से ११)

१२ - वनवास के लिये देश छोड़ते समय उसने कहा कि, वह धन्य है जो सर्व सुख सम्पन्न अयोध्या में राज्य करता है।

-(अयोध्या काण्ड, ५१ अध्याय)

१३ - वह इस सोच विचार में पड़ा रहा कि - "क्या हम लोग अयोध्या सुरक्षित लौट आयेंगे।" -(अयोध्या काण्ड, ५१अध्याय)

१४ - जब भरत ने वन में आकर राम से अनुनय विनय की "तुम लौट चलो और अयोध्या पर राज करो" - तब लक्ष्मण ने क्रोध पूर्वक कहा कि "अब मैं भरत को मारने जा रहा हूं। -(अयोध्या काण्ड, ९६ अध्याय)

१५ - विराधन को वन में रख कर उसने कहा कि "मैं भरत से बदला लेने आ रहा हूँ। मैंने उसके ऊपर आरोप लगाया है कि उसने राजगद्दी हथिया ली है।" -(आरण्य काण्ड, २ अध्याय)

१६ - उसने सूर्पनखा से कहा कि, "सीता चरित्रहीन है, उसकी छातियाँ ढल चुकी हैं। -(आरण्य काण्ड, १८ अध्याय)

१७ - सीता के प्रति उसका बर्ताव सीता के संदेह का कारण बन चुका था। वह उससे प्रेम करता था और उसके साथ सम्भोग करना चाहता है।

१८ - उसने अपने ज्येष्ठ भाई की स्त्री के प्रति राम से कहा कि, "सीता को चाहे कोई भगा ले जाये, चाहे वह मर जाये। यह कोई बड़ी बात नहीं है। क्या हमें ऐसी नीच स्त्री के लिये कष्ट सहने चाहिये?"

१९ - लक्ष्मण ने थाटगाई, सूर्पनखा व अयोमुखी जैसी स्त्रियों के कान, नाक और स्तन काट कर उनका रूप बिगाड़ा था।

२० - "दुख में खोया हुआ राम स्वयं तुम्हारी शरण में आया, उसके साथ दया कीजिये।" ऐसा कहते हुये उसने सुग्रीव को आत्म समर्पण कर दिया।

२१ - इसके कुछ समय पहिले से सुग्रीव को कत्ल करने के लिये वह राम की आज्ञा चाहता था।

२२ - वह राम की इच्छानुसार सीता से झूठ बोला था और गर्भवती दशा में उसे जंगल में छलपूर्वक छोड़ आया था।

२३ - राम और भरत दोनों उसके बड़े भाई थे- किन्तु वह राम का सहायक व भरत का विरोधी था, इसी प्रकार वह कौशल्या का भक्त तथा कैकेई से घृणा करता था। इन सब बातों का कारण क्या था? क्या उसकी राजगद्दी प्राप्त करने की इच्छा के अतिरिक्त कोई अन्य बात हो सकती है।

अन्य जन

अब हमें भरत, कैकेई, सुग्रीव, शत्रुघ्न, सुमंत, अङ्गद, कौशल्या, वशिष्ठ, विभिषण, सुमित्रा, हनुमान, रावण व बालि का संक्षिप्त अध्ययन करना चाहिये।

भरत

हम भरत में कोई महत्वपूर्ण बात नहीं पाते हैं।

१ - वह अपने नाना के महल में दस वर्ष के दीर्घकाल तक खिलाड़ी लड़के की भांति बना रहा।

२ - वह वहां से बुलाये जाने पर ही अयोध्या लौटा, उसने अपने पिता, माता व परिवार की कोई चिन्ता नही की।

३ - अपने नाना के यहां से अयोध्या लौटने पर राम के विषय मे सुन उसने छानबिन की, कि ,राम किसी अन्य स्त्री को बलपूर्वक तो नहीं लिये जा रहा है। - (अयोध्या काण्ड, ७२ अध्याय)

४ - उसने अपनी माता को बुरा भला कहा तथा उसपर गालियो के बौछार की, उसने उसे कर्कशा, पिशाचिनी, वेश्या, दुष्टा व नट-खट स्त्री कहा तथा यह भी कहा कि अच्छा होता कि, वह मर जाती। "तू देश से दूर जा, मुझे तेरा पुत्र होने मे दुःख है।" इस प्रकार उसने अपनी माता को जिसने उसे राजगद्दी प्राप्त कराने मे कठिनाईयाँ सही जो (कैकेई के विवाह के समय दशरथ द्वारा किये प्रण के) नियमानुसार उसीके लिये राजगद्दी थी फटकारा और बुरा भला कहा। उसने वस्तुस्थिति तथा अपनी माता को समझाने का प्रयत्न नहीं किया।

५ - उसने अपने पिता को उपद्रवी व प्रजापिडक की संज्ञा दी। - (अयोध्या काण्ड, ७३, ७४ चरण ४,५) - वन मे राम से वार्तालाप करते हुये उससे प्रार्थना की थी, कि अयोध्या लौटकर राजगद्दी लो और राजवंशीय अन्य स्त्रियों के बीच आनन्द मनाओ।

-(अयोध्या काण्ड, १०५ अध्याय)

६ - भरत के भी बहुत स्त्रियाँ थी।

शत्रुघ्न

एक महान मूर्खता

१ - उसने अपनी सौतेली मात कैकेई को गालियाँ दी।

२ - उसने मन्थरा को फटकारा, मारा अङ्ग तोड़ दिया-क्योंकि वह आद्योपान्त, सब भेद जानती थी। वह न्याय स्थापित करने के लिये अपनी स्वामिनी के प्रति स्वामिभक्त थी। कर्तव्यपरायण थी।

संकेत :- इस भेद को ध्यान पूर्वक समझाने की आवश्यकता है, कि भरत और शत्रुघ्न जिन्होंने अपने माता-पिता को गालियाँ दी और उन्हें अपमानित किया, अपने बड़े भाई राम के प्रति भक्ति प्रदर्शित करते हैं।

कौशल्या

उसका चरित्र बहुत सी स्त्रियाँ रखनेवाले मनुष्य की स्त्रियो के सामने निम्न कोटि के परिवार जैसा था।

१ - उसके मस्तिष्क में अपने पुत्र राम को किसी न किसी प्रकार राजगद्दी मिलने की उत्कट अभिलाषा हर समय रही।

२ - वही कैकेई से द्वेष रखती थी। वह उसकी शत्रु थी।

३ - उसे इस बात का दुःख था कि, मैं वृद्ध हो गयी हूँ। अब मेरे शरीर का आकर्षण समाप्त हो गया। -(अयोध्या काण्ड २० अध्याय)

४ - अपने पति के प्रति तनिक भी सम्मान की भावना न रखते हुये उसने उसे गालियाँ दी।

सुमित्रा

उसमे वर्णन करने योग्य गुण नहीं थे।

१ - वह जानती थी, कि उसके पुत्र को गद्दी मिलनी नहीं है- इस कारण वह राम के राजा होने की इच्छुक थी।

२ - चौदह वर्ष व्यतीत होते ही राम तुरन्त लौट आयेगा और भरत से राजगद्दी छीन लेगा, इस प्रकार वह कौशल्या को ढाढ़स बंधाया करती थी। इससे प्रकट होता है- कि, वे दोनों भरत के प्रति दुष्टा थी।

कैकेई

१ - वह सुंदर और वीराङ्गना रानी थी।

२ - उसने दो अवसरों पर अपने पति की रक्षा की थी।

३ - अयोध्या का राज्य उसी का था- क्योंकि उसने अपने पति का जीवन बचाया। और उससे ब्याह करते समय राजा दशरथ ने अपना राज्य उसी को सौंप दिया था।

४ - वह भरत से हर समय कहा करती, कि, "मैं राम को राज्य सौंप दूंगी और मैं उसे सौंप चुकी हूं।" इस पर उसने कभी आपत्ति नहीं की।

५ - राजगद्दी प्राप्त करने के अपने अधिकार को लेने का उसने प्रयास किया। उसने दुष्टता पूर्ण विचारों को अपने हृदय में स्थान नहीं दिया और न कोई तुच्छतापूर्ण कार्य किया।

सुमन्त्र

यद्यपि वह मंत्री-किन्तु वह सच्चा व धार्मिक व्यक्ति नहीं था।

१ - दशरथ के साथ उसका व्यवहार छलकपटपूर्ण था, उसने उसे कभी उचित परामर्श नहीं दिया।

२ - वह राजा की रानी कैकेई से उपहासास्पद वार्तालाप किया करता था।

-(अयोध्या काण्ड, ३५ अध्याय)

३ - वह झूठ भी बोलता था।

वशिष्ठ

एक साधारण पुरोहित की भांति उसका कोई अच्छा व्यवहार नहीं था।

१ - यह पहिले से जानते हुये कि, राजगद्दी पर भरत का ही अधिकार है, उसने रामको राज्यभिषेक करने की युक्ति निकाली थी।

२ - भरत के राजगद्दी न मिल सकने के विषय में रचे गये षड्यत्र को सफल बनाने के लिये उसने राज्यभिषेक की तिथि शिघ्र की निर्धारित कर दी।

३ - उसने राम राज्यभिषेक की ऐसी शुभ तिथि निश्चित की-जो अन्त में राम बनवास के रुप में परिणित हो गई।

हनुमान

यह एक साधारण व्यक्ति था, उसने कोई बुद्धिमत्ता का कार्य नही किया था, कहा गया है, कि उसे जो यश तथा प्रसिद्धता प्राप्त हुई। वहा केवल उसके आश्चर्यजनक कार्यों के लिये जो तर्क के समक्ष क्षणमात्र भी नहीं ठहर सकते।

१ - उसने अन्यायपूर्वक लंका में आग लगा दी, उसने अनेकों असहाय व निर्दोष मनुष्यों का वध किया और इस प्रकार उसने बहुत बड़ी बरबादी की।

२ - सीता से वार्तालाप करते समय निर्लज्जता तथा असभ्यता पूर्ण शब्दों का प्रयोग किया था, यहां तक कि उसने मनुष्य-लिङ्ग के विषय में भी सीता से बातचीत की थी- जो उसे स्त्रियों के समक्ष नही करनी चाहिये थी। -(सुन्दर काण्ड, ३५ अध्याय)

बालि

बालि किसी प्रकार भी मारने के योग्य नही था।

१ - वह अपने भाई को नहीं मारना चाहता था।

२ - सुग्रीव ने अनावश्यक रुप से उसके साथ झगड़ा खड़ाकर दिया था।

३ - बालि सम्भवतः निष्पाप था- इस कारण कोई दोष नहीं था।

४ - वह अपनी स्त्री से सुग्रीव को न मारने की प्रतिज्ञा करके युद्ध क्षेत्र में गया था।

५ - वह बहुत धैर्यवान तथा शक्तिशाली था।

६ - वह सच्चा, खरा व त्यागी था।

७ - कोई भी मनुष्य, यहा तक कि अकेला राम भी उसके साथ आमने सामने युद्ध करने मे असमर्थ था।

८ - वह बहुत से महान व्यक्तियों का प्रिय मित्र था।

९ - उसे राम को सच्चा पुरुष समझने मे भ्रम हो गया था।

१० - बालि की मृत्यु पर सुग्रीव ने उसके गुणो की प्रशंसा की थी और कहा था, कि "मैं अपने ऐसे भाई को खोकर जिवित नहीं रहना चाहता- अब मैं चिता मे जलकर भस्म हो जाऊंगा।

बालि जैसे योग्य पुरुष मार डालने का कार्य धर्मसंगत बताने के लिये राम ने कहा था, कि "पशुओं को मार डालने में धर्म का विचार नही करना चाहिये।" क्या वह पशु था?

सुग्रीव

उसने अपने भाई को धोखा दिया था।

वह केवल अपने भाई के मार डालने हेतु राम का दास बना।

अंगद

अंगद मे आत्मसम्मान की भावना नहीं थी, उसने राम से मित्रता की जिसने उसके पिता को मार डाला था।

१ - वह अपने चाचा सुग्रीव के प्रति शुभेच्छु न था और न उससे प्रेम करता था।

२ - अपने आपका ज्ञान न रखने वाले दास के तुल्य उसने व्योहार किया।

विभिषण

१ - अपने भाई रावण की मृत्यु का कारण बन कर लंका का राजा स्वयं बन जाने के लालच से प्रभावित होकर उसने अपने पारिवारिक शत्रु राम को आत्मसमर्पण कर दिया था।

२ - जब इन्द्रजित से पराजित होकर राम व लक्ष्मण धराशायी हो गये- तब अपना दुःख प्रकट करते हुये उसने कहा, कि "राम व लक्ष्मण की शक्ति पर भरोसा करके मैं अपना भविष्य बनाने के लिये उसके पास आया था-किन्तु अब मेरी सम्पूर्ण आशाओं पर पानी फिर गया. राज्य खो दिया, दूसरे मैं आपत्ति मे फँस गया, मेरे शत्रु रावण की प्रतिज्ञा

पूरी हो जाने के कारण प्रसन्न है।" इस प्रकार उसने लंका का राजा करने के लालच को स्पष्ट प्रकट किया था।

-(युद्ध काण्ड, ४९ अध्याय)

३ - हनुमान, सुग्रीव तथा अन्य जनो ने रामसे उक्त संकेत किया था।

४ - रामने भी, जो इस बात को जानता था, कि "मुझे ऐसेही मित्र मनुष्य की आवश्यकता है।" - (युद्ध काण्ड , १७ अध्याय)

५ - रावण के जिवित रहते ही राम ने उसे राजा बना दिया था व उसने उसे प्रसन्नतापूर्वक स्विकार कर लिया था। - (युद्ध काण्ड, १८ अध्याय)

६ - इसके परिणामस्वरूप उसने राम को बहुत सा गुप्त भेद बताया।

७ - उसने अपने आपको राम के हवाले कर दिया और अपने भाई को केवल यह बहाना बना कर, कि मेरा भाई रावण सीता को हर लाया हैं, धोखा दिया है। लंका का राजा स्वयं बन जाने के वास्तविक कारण ने ही उसे ऐसा करने को विवश किया था-न कि इस कारण से कि वह सच्चा और न्यायी था- यह कैसे?

८ - उसने रावण की वाटिका मे अनधिकृत रुप मे प्रवेश करते हुये व वहां के जानवरों का शिकार करते हुये राम पर कोई ध्यान नहीं दिया था।

९ - जब उसकी बहन सूर्पणखा व अन्य सम्बधित स्त्रियों के नाक, कान व स्तन काट डाले गये तथा कुछ स्त्रियाँ मार भी डाली गई, तब उसका खून न खौला और न उसे कोई बेचैनी हुई।

१० - ऐसी भयानक भूलों के कर्ता विभिषण को एक सच्चा, न्यायी और वीर मनुष्य मानकर उसकी प्रशंसा करना एवं उसके भाई रावण ने जिसने पूर्णरूप से अपनी आधीनता में हो गई सीता के साथ सम्मानपूर्वक बर्ताव किया, एक दुष्ट मनुष्य की भांति घृणा करना। इन सब बातों मे रावण को अनुचित दबाना, लंका के राज्य को अपने अधिकार मे कर लेने की दूरन्देशी है। ये सब बाते स्वार्थ एवं विचारों की संकीर्णता के अतिरिक्त और क्या हो सकती है?

रावण

१ - रावण मे नीचे लिखी विशेषतायें थी।

(१) एक महान विद्वान।

(२) बहुत बड़ा सन्त।

(३) वेदशास्त्रों का ज्ञाता।

(४) अपने सम्बन्धियों व प्रजा का दयालुतापूर्वक पालनकर्ता।
(५) वीर योद्धा।
(६) शक्तिशाली पुरुष।
(७) शूरवीर सिपाही।
(८) पवित्र आत्मा।
(९) परमात्मा का प्रिय-पुत्र।
(१०) वरदानी पुरुष।

वाल्मिकि ने स्वयं रावण की उपरोक्त दस विशेषताओं का वर्णन किया है तथा उसकी प्रशंसा कई स्थलों पर की है।

२ - अपने भाई रावण की सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्नता से द्वेष रखने वाला कमिना विभिषण उसकी मृत्यू का कारण बना। रावण शीघ्र ही मर गया- तो भी विभिषण उसकी अन्त्येष्टक्रिया पर मन मसोस कर अन्दर ही अन्दर दुःखी होकर उसके योग्यतापूर्ण गुणानुवाद करता हुआ, उसके शव पर गिर पड़ा और कहा कि "तुम न्याय करने में कभी असफल नहीं रहे तथा सदैव महान पुरुषों का सम्मान, किया।"

- (युद्ध काण्ड, १११ अध्याय)

३ - अपनी बहन सूर्पणखा के प्रति की गई असहनीय दुष्टता और अपमान से कुपित होकर उसके प्रतिकार स्वरुप रावण सीता को लंका में ले गया था।

४ - हनुमान ने स्वयं रावण के प्रेम के विषय में सफाई देते हुये कहा कि 'रावण के महल की सभी स्त्रियों ने स्वेच्छापूर्वक उसकी राणियाँ होना स्वीकार किया था। उसने किसी भी स्त्री को बिना उसकी इच्छा के छुआ तक नहीं। - (सुन्द काण्ड, ९ अध्याय)

५ - रावण देवताओं और ऋषियों से घृणा करता था। क्योंकि वे यज्ञ के नाम पर छल-कपट पूर्ण स्वधर्म नियमानुसार गुंगे पशुओं को आग में बलि देकर-हृदय विदारक जघन्य-अपराध करते थे। वह किसी अन्य कारणों से घृणा नही करता था।

वाल्मीकि ने खुद कहा है, कि "रावण एक सज्जन पुरुष था वह सुन्दर व उत्साही था। किन्तु जब वह ब्राह्मणों को यज्ञ करते हुये व सोमरस पीते हुये देखता था-तब उन्हें दण्ड देता था।"

६ - वाल्मीकि ने कहा है, कि 'राम व लक्ष्मण के द्वारा सूर्पनखा के प्रति किये गये दुर्व्यवहार के दुष्परिणाम-स्वरूप गम्भीर चिढ़ तथा अनुत्तरदायित्व

पूर्ण उकराये जाने पर भी रावण ने अपनी बहन सूर्पनखा के प्रतिकार-स्वरूप सीता की छातियां, नाक और कान नहीं काटे।"

७ - पूर्व आयोजित ध्येयानुसार सीता को एकाकी जंगल में छोड़ दिया गया था- ताकि उस सीता को रावण द्वारा ले जाये जाने में सुविधा हो क्योंकि सीता की भी अभिलाषा थी, की रावण उसे ले जावे, इसलिये उसने तैयारीयाँ भी की थी। इस विषय पर कई अनुवादकों की व्याख्या से यह दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है।

८ - उसने अपने मन्त्रियों की जो सभायें आमन्त्रित की थी- उसमें हुये विचार विमर्श उसके दया-शील शासन के उदाहरण हैं।

संकेत :- रामायण में चरित्र, आचरण और योग्यता का निरूपण वाल्मीकि द्वारा निर्मित, रामायण तथा स्वयं ब्राह्मणों द्वारा तामिल भाषा में अनुवादित पुस्तकों पर आधारित है, इससे पाठक विश्वास कर लेंगे, कि रामायण के वे आदर्श-चरित्र, जिनको कि पाठक ग्रहण किये हुये हैं। स्पष्ट और संक्षिप्त बातें यह हैं, कि रामायण में ठीक तथा उचित विचारोंको को अयोग्य, अधर्मी और इसके विपरीत मिथ्यावादी, विश्वासघाती, एवं गुण्डों को ऊँचा उठाया गया है, सम्मानित किया गया है, उनमें स्वर्गीय-शक्ति मानी गई है।

इस पुस्तक का उद्देश्य इन मिथ्या विचारों को भोले-भाले आदमियों से हटाना तथा यह बताना है, कि केवल भेष से कोई साधू नहीं हो जाता है।

बंङ्गाली रामायण

बंगाली रामायण के 'लंकावतार सूत्र' में वर्णन किया गया है, कि, रावण द्रविड़ राजने कहा कि रावण प्रेम एवं सम्मानपूर्वक अपने देश में शासन करता था।

रावण ने रणक्षेत्र में मरते समय राम को अपने पास बुलाकर दयालुता के सिद्धान्तों तथा राम द्वारा उसके साथ किये गये छलकपटपूर्ण युद्ध के विषय में उसके कानों में बताया था। इस प्रकार हम 'कीरथवास रामायण' में पाते हैं कि, रावण सत्यता का उपदेश देता था और वह न्यायी था। (पृष्ठ १२४)

रामायण-काल के मादक पेय पदार्थ

डॉक्टर एस.एन.व्यास ने दिल्ली में दिनांक पन्द्रह अगस्त सन उन्नीस सौ चौवन ईसवी में 'कारवां' नामक प्रकाशित पुस्तिका में रामायण काल के मादक पेयों का वर्णन किया है।

१ - किण्वसुरा- यह कुछ वस्तुओं को उबाल कर बनाई जाती है।
२ - मीराध्या - यह मसालों से तैयार की जाती है।
३ - मद्य - बेहोश तथा मतवाला बना देने वाला पेय पदार्थ।
४ - मन्था - यह साधारण मादक पेय पदार्थ था। यह पथिमन्थ भी कहलाता था। यह अधिक नशीला न होती थी। इसे पीना सभी पसन्द करते थे।
५ - सुराव सुरावानम - यह उपरोक्त पेयों से भिन्न थी। यह कृत्रिम विधि से निथार कर बनाई जाती थी तथा यह प्राकृतिक मादक पेय थी। यह सर्व साधारण का पेय पदार्थ था। पुराणों मे इस विषय मे बहुत वर्णन है।
६ - सिधु - यह गुड के शीरे से बनाई जाती थी।
७ - सोव्वकाक - यह धन हिनों की पेय थी।
८ - वायणी - यह पेय पदार्थ सब से कड़ी और गहरी होती थी। इसे पीते ही लोग लड़खड़ाने लगते थे और धनवान इस का प्रयोग करते है।

राम और सीता के चरित्र

(वाल्मिकी-रामायण के आधार पर श्री पैरियर ई.व्ही.रामास्वामी नायकर द्वारा संग्रहित)

ब्राह्मणों के साथ ही साथ छापखाने (प्रिन्टींग-प्रेस) भी हम लोगों के रामायण मे वर्णित मिथ्या तथा दुराचारपूर्ण बातों के प्रकट करने मे हमारे शत्रु हैं। वे समाचारपत्रों मे जो कुछ मैं तर्क पूर्ण बाते उपस्थित करता हूँ, बिना उससे सम्बन्धित तर्कपूर्ण सन्दर्भ को प्रकट करते हुये (मेरे लिखे हुये) समाचार के एक या दो पन्ने फाड़ कर (शेष अधूरे लेख को) भोले पन से यह छपवा देंगे, कि "पैरियर ई. व्ही. रामास्वामी नायकर" कहते हैं, कि "राम गुण्डा तथा सीता वैश्या थी" इसका अर्थ क्या है? इसका तात्पर्य केवल यह है, कि भ्रमोत्पादक काटछाट और (भ्रमोत्पादक) तर्क से लोगों को हमारे विरुद्ध खड़ा करना।

रामायण केवल कपोलकल्पित गप्प है, यह ईश्वर की कथा नहीं है, जैसा कि सर्वसाधारण लोगों द्वारा समझी जाती है, इस बात को बहुत पुरुषों द्वारा स्विकार किया गया है। श्री गान्धी ने स्वयं कहा था, कि "मेरा 'राम' रामायण के राम के समान नहीं है।"

श्री टी. के. चिदम्बरनाथ मुदलियर जिनका उन्हें चिढ़ानेवाला उपनाम "कलियुग

कम्बा है, ने घोषणा की है, कि रामायण कोई स्वर्गीय-कथा नहीं है 'विड़ला' जैसे धनवान एवं विद्वानों की सहायता से संचालित बम्बई की 'भारत इतिहास समाधि' के सदस्यों ने 'वैदिक युग' नामक स्वलिखित पुस्तक में वर्णन किया गया है कि, किसी भी 'पुराण' की न कोई ऐतिहासिक पृष्ठ-भुमि है, न वे शिक्षाप्रद हैं, न उनके पात्रों के चरित्र अनुकरणीय है। केवल मिथ्या गप्प है। श्री सी. राजगोपालाचार्य ने घोषित किया है, कि 'राम ईश्वर नहीं है। वह केवल एक योद्धा है।'

क्या राम ईश्वर का अवतार है?

अनुसन्धान के अन्य विद्यार्थी तथा विद्वान इसी विचार के समर्थक है, व राम को न तो ईश्वर का अवतार मानते हैं व न रामायण को इस प्रकार के स्वर्गीय-पुरुष का जीवन-इतिहास। वाल्मिकि के साथ ही साथ मौलिक रामायण के अन्य लेखक ने भी अपनी पुस्तक में राम को उतना सम्मानित नहीं किया है जितना कि उसे ईश्वर का अवतार मानकर सम्मानित किया जाना चाहिये था।

सर्वप्रथम उदगम पृष्ठभूमि जहां से कथा प्रारंभ होती है। अनर्थक तथा हास्यास्पद हैं। यहां वर्णन किया गया है कि, विष्णु ने 'बिरहू' मुनि की स्त्री को मार डाला। इसके दुष्परिणाम-स्वरूप मुनि ने उसे श्राप दिया कि, "तू भविष्य में मनुष्य के रूप में पैदा होगा और तेरी स्त्री हर ली जावेगी और इस प्रकार मेरी भांति तू भी स्त्रीवियोग का दारुणा दुःख सहेगा।" एक कथा तो इस प्रकार है।

दुसरी कथा इस प्रकार चलती है कि, वही विष्णु जलन्धर की पत्नी 'वृन्दा' पर मोहित हो गया और वह उसके पति जलन्धर को छलकपटपूर्वक मार डालने में सफल हो गया। तब उसने जलन्धर का भेष धारण कर उसकी स्त्री का सतीत्व लूटा। विष्णु द्वारा इस प्रकार ठगी जाने का रहस्य जानकर जलन्धर की स्त्री ने उसे श्राप दिया कि, "ठिक यही दुःखद घटना तेरी स्त्री के प्रति हो।" इसी श्राप के फलस्वरूप उसे पृथ्वी पर पुनर्जन्म ग्रहण करना पड़ा।

तीसरी कथा का स्त्रोत इस प्रकार है कि-एक बार विष्णु अपनी 'प्रियमंगल' नाम की पत्नी के साथ दिनदहाड़े रतिक्रिया में किमग्न था। उसी समय शिव का प्रधान गण वहां आ पहुंचा। इस पर तनिक भी ध्यान न देते हुये विष्णु अपने विषयभोग में लगा रहा। अपने इस अपमान से कुपित होकर वह गण नदी के पास गया और अपने अपमान का सम्पूर्ण समाचार शिव से निवेदन किया इस पर शंकर ने उसे श्राप दिया कि, "वह पुनः पृथ्वी पर जन्म ले और अपनी स्त्री के हरण किये जाने का शोक सहन करे।" इस कारण उसने पृथ्वी पर

पुन:अवतार लिया।

राम के पृथ्वी पर अवतार धारण करने के कारण कितने निरर्थक तथा हास्यास्पद हैं।

अब हमे उस परिवार को देखना है, जिस में राम ने अवतार लिया। राम के पिता राजा दशरथ की अपनी तीन राजवंशीय स्त्रियों के अतिरिक्त साठ हजार स्त्रियाँ थी, यह वह आदर्श पिता है, जिसका पुत्र राम हुआ। रामायण में वर्णन किया गया है कि, राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न यज्ञ की विधिवत सम्पूर्ति और समाप्ति के फलस्वरूप पैदा हुये।

अब हम यज्ञ की विशेषताओं पर ध्यान दें। कई प्रकार की चिड़ियाँ, जानवर, कीड़े-मकोड़े और जंगली मारे जाते थे और इन सभी मृत जीवों का आग में भून कर कबाब बना दिया जाता और ब्राह्मण लोग उसे खाते थे। तत्पश्चात दशरथ की तीनों स्त्रियां उन पुरोहितों को सौंप दी गयी। जिन्होंने यज्ञ किया था।

रामायण के अनुवादक बंगाल निवासी पण्डित मन्मथनाथ दातार लिखते हैं, कि "कौशल्या ने बड़ी उत्सुकतापुर्वक एक घोड़े के तीन टुकड़े कर डाले और बिना किसी मनोव्यथा के उस मृत घोड़े के साथ सम्पूर्ण रात बिता दी। "होता "अदवर्य "उवथा" और अन्य "रिकविका" पुरोहितों ने तीनों रानियों के साथ सम्भोग किया। इस प्रकार दशरथ के पुत्रों की जन्मकथा है।

क्या यह कोई अवतार लेने का ढंग है? क्या कोई कथा इस प्रकार बेढंगे तरीके से लिखी जानी चाहिये?

दशरथ का कमीनापन

कौशल देश के मूर्खतापूर्ण उद्देश्यों एवं प्रयत्नों पर रामको राजगद्दी देने तथा तत्सम्बन्धी योजनाओं व प्रबन्धों पर यदि हम विचार करते हैं- तो दशरथ का कमीनापन प्रकट हो जाता है। भरत को उसके नाना के यहां भेज दिया गया था और लगभग दस वर्ष तक नही बुलाया गया था- ताकि कहीं ऐसा न हो, कि उसकी उपस्थिति राम के राज्यभिषेक में रोड़ा न बन जावे, इसिलीये राज्याभिषेक का प्रबन्ध कर दिया गया था। कैकेय देश के राजा को कोई आमंत्रण नही दिया गया था, इस उत्सव की सूचना भरत को भी नहीं दी गई थी। दशरथ ने अपनी गुप्तवार्ता में राम से कहा था, कि "भरत का अपने नाना के घर में होने के कारण उसकी अयोध्या में अनुपस्थिति तुम्हारे राज्याभिषेक के निर्विघ्नतापूर्वक हो जाने के पक्ष में है, यह काम भरत के लौट आने के

पहिले ही हो जाना चाहिये, कल ही वह कार्य होना है। तुम्हारे मित्र तुम्हारी रक्षा करेंगे। ताकि आज रात को कोई अप्रिय घटना न होने पावे।" राजवन्शीय लोगों के साथ ही साथ सभी लोग उत्सव पर प्रसन्न थे। कैकेई तक को, जो कि राम तथा भरत को समान रूप से चाहती थी, दशरथ द्वारा अन्धकार में रखी गई थी- तो भी दशरथ के कपट-पूर्ण प्रबन्ध को जानकर उसने स्वयं दृढ़ किया, कि "भरत को राज-गद्दी दी जावे और राम को वनवास।" कैकेई को बिना कोई सूचना दिये इस मामले को गोपनीय रखने के लिये दशरथ ने उसे कोई समुचित उत्तर नहीं दिया- किन्तु निर्लज्जतापूर्वक कैकेई के चरणों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि, "ये दोनों वरदान न मांगो।" दशरथ ने कैकेई पर दोषारोपण किया, कि "उसने उत्सव संबंधी सभी योजनाओं को विफल कर दिया।"

दशरथ ने राम को गुप्तरूप से बताया कि, "मेरी इच्छा तुम्हें वनवास देने की नहीं है- किन्तु यह सब केवल प्रकटरूप से दिखावे के लिये है, कि मैं कैकेई के प्रति किये वचनों को पूरा करने के लिये तैयार हूँ।" आगे दशरथ ने राम को यह भी उकसाया, कि "तुम मेरी आज्ञाओं को न मानकर गद्दी पर अधिकार कर सकते हो।" वह चाहता था कि, राज्य का सभी खजाना, सेना व सामान आदि राम के साथ वन जावे।

कैकेई के साथ विवाह करते समय दशरथ ने उसे वचन दिया था, कि उससे उत्पन्न पुत्र को ही अयोध्या की राजगद्दी दी जावेगी। अपने इस न्यायसंगत वचन का खण्डन कर उसने राम को राजगद्दी देने की योजना बना डाली और यह जानते हुये कि, अयोध्या के राज्य का अधिकारी भरत है। सत्यवादी व न्यायी परमात्मा राम राजगद्दी लेने को तैयार हो गया था। दशरथ के गुरु मन्त्रीगण सुमन्त्र व वशिष्ठ आदि ने भी दशरथ को धर्म विरुद्ध परामर्श दिया। दशरथ द्वारा राम को वनवास की घोषणा कर दिये जाने के पश्चात लक्ष्मण अपने बाप दशरथ पर कुपित हुआ और बोला "मैं तुम्हें मार डालूंगा।" कौशल्याने भी अयोध्या में रहने की बात कहीं थी।

एक साधारण श्रेणी में राम

इस प्रकार रामायण में कई स्थलों पर राम को साधारण कोटी का मनुष्य कहा गया है।

जहां तक राम की विशेषताओं का सम्बन्ध है, हमें यह कहना पड़ता है, कि

उसने अबोध "लड़का का छल से कठोरतापूर्वक वध कर दिया- क्योंकि वह अपने राज्य में अनाधिकृत रुप से प्रवेश करके वहा पर यज्ञ सम्पादन करनेवाले पुरोहितों को ऐसा करने के लिये मना करती थी।"

जब राम बनवास जाने को था- तब उसने गम्भीर दु:ख का अनुभव किया और उसने अपनी माता व स्त्री को बताया, कि, "जो राज्य मुझे मिलनेवाला था- वह मेरे हाथों से निकल गया और मुझे बनवास दे दिया गया है।"

राम ने लक्ष्मण से बनवास मे कहा था, कि "क्या कोई ऐसा मूर्ख होगा जो कर्तव्यपरायण तथा आज्ञापालन अपने पुत्र को बन मे भेज दे?" इस प्रकार अयोध्या का राज्य न मिल सकने के कारण शोकविमग्न राम ने अपने पिता को निन्दनीय शब्द कहे।

बनवास मे राम ने सूर्पणखा के कान और नाक काट लेने का अपराध किया, क्योंकि वह उससे प्रेम करती थी। बन मे आकर राक्षसों का वध करने के निश्चय को अपना लक्ष्य बनाकर उसने स्वेच्छापुर्वक व्यर्थ में लड़ाई मोल ली। सुग्रीव की भलाई के लिये उसने आड़ मे छिप कर कायरतापूर्वक बालि को मारा-जिसने राम के प्रति कोई अपराध नही किया था, इस बात को भलीभांति तथा पूर्णतया यह जानते हुये, कि "दुष्ट और विश्वासघाती विभिषण अपने भाई रावण का वध कर स्वयं लंका का राज्य हथियाने के कपटपूर्ण उद्देश्य से मेरी शरण में आया है। राम ने लंका पर राज्य करते हुये रावण का वध करके विभिषण को वहाँ का राजा बनाया था।

राम का कपटपूर्ण विचार

सम्पूर्ण रामायण में देखा जा सकता है कि, राम पाखण्डी, छली, कपटी और दुष्ट था, वह अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये कोई भी घृणित कार्य करने पर उतारु हो जाने के उद्देश्य से तैयार कर दिया गया था।

जब सीता उसके साथ बन में जाने को प्रस्तुत ली तब राम ने अपनी इच्छा प्रकट की थी, कि "तुम भरत की सभी प्रकार की इच्छानुसार अयोध्या के महलों में रहो क्योंकि, इस प्रकार हम लोग कुछ अधिक प्राप्त कर सकने में सफल हो सकेंगे।" इस पर सीता ने राम को राम पर क्रोध करते हुये फटकारा और कहा, "कि तुम कायर तथा अशक्त हो। तुम मनुष्य के भेष में स्त्री हो। मेरे पिता ने मेरा विवाह तुम्हारे साथ किया है। तुम अपनी स्त्री को दूसरो को सौंप कर अनुचित जीवको पैदा करने वाले मनुष्य में से हो।" इस पर राम ने अपने

असली विचारो को छिपाते हुये कहा कि, "मै केवल तुम्हारे मन की स्थिति का परिक्षण कर रहा था।" तब वह उसे अपने साथ बनवास को ले गया।

जब कभी राम बनवास मे अनुभव करता, कि भविष्य मे कोई घटना होने वाली है, तब वह कैकेई पर बुरी तरह से दोषारोपण करता कि, "मेरे दुःख से अब कैकेई सुख व प्रसन्नता का अनुभव करती होगी।" वह मन ही मन असन्तुष्टतापूर्वक बड़बड़ाया करता था, कि "मै यहां बन मे चला आया हूँ, मेरा पिता वृद्ध हो गया है, अब भरत पूर्ण रुपसे स्वतन्त्रतापूर्वक राज्य कर रहा होगा, उसके विरुद्ध कोई कुछ नही कर सकता है।

आगे राम ने और क्या किया? शुद्र होकर तपस्या करने के कारण उसने शम्बूक का वध किया। ऐसे अयोग्य, नीच व छली व्यक्ति को ईश्वर का अवतार कैसे माना जाये। धुर्तब्राह्मणों ने झूठे अशक्त, अयोग्य व चरित्रहीन एक साधारण व्यक्ति का ईश्वर बना कर हम लोगो को उससे प्रेम करने और उसकी पूजा करने को बाध्य किया है! क्या हम लोगो को यह उचित नही है, कि हम लोगों को समझ और बुद्धि पर जो मिथ्या बाते बतलादी गई है, हम उस का गम्भीरतापूर्वक निरीक्षण करें।

ये राम के चरित्र है।

सीता की पैदायश

अब हमें सीता की ओर अपना ध्यान आकर्षित करना चाहिये। उसे सम्पूर्ण रामायण में कुलीन वंश के उचित गुणोरहित एक साधारण स्त्री माना गया है। उसके मातापिता में सन्देह है। नहीं पता कि, उस के माता-पिता कौन है?

ऐसा वर्णन किया गया है कि, राजा जनक ने हल चलाते हुये उसे पृथ्वी में पाया था। उसे कलंक से बचाने के लिये साहित्यिक भाषा का प्रयोग करते हुये वर्णन किया गया है कि, वह महालक्ष्मी पैदा भी नही हुई-बल्कि वह पृथ्वी पर एक स्वयं बालिका के रुप मे प्रकट हुई।

उसके माता व पिता के विषय मे सन्देह होने के कारण पूर्ण यौवनावस्था प्राप्त कर चुकने के पश्चात भी वह कई वर्षो तक कुंवारी बनी रही थी, उसने इस बात को बन मे दुःख प्रकट करते हुए स्वयं स्वीकार किया था। क्या कहा जाये, महालक्ष्मी के जन्म भी निराधार तथा हास्यास्पद है, रामायण की सम्पूर्ण कथा में उसके चरित्र के विषय मे कोई प्रशंसनीय बात नहीं है।

सीता की मूर्खता

जब राम ने बनवास जाने का निश्चय किया जा चुका-तब सीता ने कहा कि, मेरे विषय मे भविष्यवक्ताओं ने पहिले ही कहा था कि मुझे बन मे रहना होगा। उसने यह भी कहा कि, मैं अपने पति के साथ बनवास जाना चाहती हूँ। राम और लक्ष्मण वल्कल वस्त्र धारण किये हुये थे- किन्तु सीता ने वह भेष पसन्द नही किया इस पद दशरथ ने आज्ञा दी कि आवश्यकीय वस्त्र और आभुषण जितने चौदह वर्ष के लिये पर्याप्त हो सीता के प्रयोग के लिये उसके साथ भेज दिये। उसने अति प्रसन्नतापूर्वक उन्हे पहिना और अपने आप को सुन्दरतापूर्वक सुसज्जित किया, किन्तु पति का तापस, भेष और उसकी स्त्री का राजवन्शीयभेष। इस प्रकार से बनवास को चल दिया। चुंकि दशरथ ने केवल राम बनवास दिया था। सीता को नहीं। इसलिये बन जाते समय वशिष्ठ, सुमन्त, व अन्य पुरुषों ने सीता बन जाने से रोका- किन्तु इस पर कैकेई सहमत नही हुई। अतः उसे अपने पति के साथ जाना पड़ा। इस प्रकार सती आदर्श कहलाने वाली सीता के कार्यकलाप यही पर समाप्त नही हो जाते। राम की माता अर्थात सीता की सास ने सीता की आभूषणों व बहूमूल्य वस्त्रों और रुचि देखकर यह कहते हुये उसने सीता को शिक्षा दी, कि "अपने पति की प्रेमपात्र होने योग्य काम करो। मतिहीन न बनो।" इस पर सीता ने अपनी सास को तपाक से उत्तर दिया , कि "मैं प्रत्येक बात जानती हूँ।" मुझे तुम से सीखना कुछ भी अवशेष नही हैं।"

सीता के लिये भरत के साथ रहने की इच्छा प्रकट करते हुये राम ने सीता से कहा, कि "तुम भरत के साथ रहो।" इस पर उसने राम को निन्दनीय उत्तर दिया, कि मैं उस भरत के साथ नहीं रहना चाहती, जो मुझे से घृणा करता है।"

बनवास में जब कभी उस पर किसी कठिनता या अन्य कष्ट का सामना करना पड़ता- तब वह बुरी तरह से कैकेई पर दोषारोपण किया करती थी।

सीता के बचनों से शक्तिशाली भी कांपना

जब राम ने मृग का पिछा किया व मृग अति पीड़ा से चिल्लाया "सीता! लक्ष्मण।।" तब सीता ने लक्ष्मण से राम के पास जाने तथा उसकी सहायता करने को कहा। इस पर लक्ष्मण ने उसको उत्तर दिया, कि "मेरे भाई के ऊपर कोई दुःख नही आ सकता है." इस पर वह क्रोधित होकर उबल पड़ी और लक्ष्मण पर दोष लगाया कि, क्या राम की मृत्यु हो जाने पर तुम मुझे फुसलाना और पथभ्रष्ट करना चाहते हो? क्या तुम इसी उद्देश्य से बन मे आये हो? मैं

तुम्हें जानती हूँ तुम और भरत ने मुझे बिगाड़ने का षड़यंत्र रचा है।" इस पर लक्ष्मण कांपने लगा और उसने हाथ जोड़कर कहा कि, "हे माता! मैं तुम्हारे पैरो के अतिरिक्त तुम्हारा अन्य कोई अंग नही देखा है। कृपा कर के ऐसी बात न करो।" सीता ने इसी कमी को कैसे पूरा किया? उसने पुनः लक्ष्मण से प्रश्न किया, "क्या तुम मुझ पर अपनी आँखे गड़ाये रह कर केवल समय व्यतीत करना चाहते हो?"

जगत माता तथा देवी के मुख से निकले हुये उपरोक्त शब्दो को सुनिये, एक शक्तिशालिनी स्त्री भी इस प्रकार बाते कर सकती है- तो भी सीता ने ऐसे शब्द कहे और व शक्तिशलिनी स्त्री, सर्व व्यापी एवं त्रिकालदर्शी की अर्द्धांङ्गिनी कही जाती है। वह लोगो को आदर्श जीवन व्यतीत करने हेतु शिक्षा देने के लिये अवतरित समझी जाती है। सीता के जीवन की महत्ता इतनी ही नही है, जितनी यहां की कही है।किन्तु अभी बहुत कुछ और भी है।

रावण द्वारा सीता के सुन्दरता की प्रशंसा

सीता रावण को भोजन भी परोसती थी।

सीता की तुच्छता पर कुपित होकर उसमें होई सुशीलता तथा महानता न पाकर लक्ष्मण ने उससे मुख मोड़ लिया था। रावण मानो अपनी पुर्व आयोजित योजनानुसार साधु भेष मे शिघ्रतापूर्वक प्रकट हुआ। सीता ने उसका ह्रदय से सत्कार किया। इस पर रावण सीता की आंखो, दांतो, चेहरे तथा जंघाओ की प्रशंसा करने लगा और उसके स्तन की तुलना नारियल से करने लगा। वह सीता के शरिर की प्रशंसा करता हुआ कहने लगा कि, "ज्यों ज्यों मैं तुम्हारे अङ्गो" प्रत्येङ्गों को देखता हूँ। त्यों-त्यों अपने आप को संभालने मे असमर्थ हो जाता हूँ। तुम्हारी सुन्दरता मेरे ह्रदय को खरोंचे डाल रही है। जैसे नदी का कोई नाला नदी के किनारे को खरोंच डालता है।"

इसप्रकार वह सीता के एक एक अंग की प्रशंसा करता रहा। यदि वास्तव में सीता आदर्श चरित्रवाली सती स्त्री होती तो वह प्रत्येक की ईर्षा का कारण बन जाती। उसने क्या किया है? क्या कोई मनुष्य हमारी स्त्रियों से इस प्रकार की बातें कर सकता है? और यदि वह ऐसा करता है-तो क्या वह बच सकता है? किन्तु सीता ने क्या किया? रावण द्वारा अपने शरिर की सुन्दरता का बखान सुनकर निहाल सीता रावण को खाना परोसती थी।

सीता अपने को युवती बताकर रावण से अवस्था छिपाती थी।

खाना परोस चुकने के पश्चात सीता रावण से बातें किया करती थी कि, मैं जनक की पुत्री और राम की स्त्री हूँ ......। उसने रावण को अपनी वास्तविक अवस्था से कम अवस्था बताई थी। जब वह बन में आई और रावण से बातें कर रही थी-तब वह तेरह वर्ष की थी, उसने पुनः उसे बताया, कि "जब मेरा विवाह हो जाने के बाद मैं बारह वर्ष अयोध्या में रही" . उसने पुनः कहा, कि "जब मैं बनवास में आई- तब मैं अठारह वर्ष की थी, ये कैसी है अनुकूलता? वह अपने विवाह पश्चात बारह वर्ष अयोध्या में रही उसके शब्दों के अनुसार पूर्ण -यौवनावस्था को प्राप्त हो चुकने के कई वर्ष बाद क्वाँरी दशा में वह अपने पिता के घर रही- किन्तु रावण के सम्मुख जो कुछ उसने कहा, उसके अनुसार उसका विवाह छठवीं वर्ष में हो गया होगा। क्या सीता केवल छः वर्ष में यौवनावस्था प्राप्त कर सकती थी। छः वर्ष में यौवनावस्था को प्राप्त करने के पश्चात कई वर्षों तक क्वाँरी दशा में उसके अपने पिता के घर रहने की बात यदि स्विकार कर भी ली जाय-तो उसने इस प्रकार केवल हां हूं क्यों की ? वह केवल अपनी वृद्धावस्था को छिपाना है।

वह साधारण तौर पर पैंतालीस वर्ष की थी, चूंकि युवती हो जाने के कई वर्ष बाद तक अपने पिता के घर रही। इसलिये विवाह के समय वह बीस वर्ष की रही होगी।(बारह वर्ष अयोध्या में, तेरह वर्ष बनवास में, बीस वर्ष अपने पिता के घर में। अतः इस प्रकार पैंतालीस वर्ष हो गये।

लक्ष्मण ने भी यह बात दृढ़तापूर्वक कही थी कि, सीता बड़े पेट वाली एक अधोवृद्धा स्त्री है। यह बात उन्होंने कब कही? सूर्पणखा राम से प्रेम करती थी, और उससे विवाह करना चाहती थी । राम ने इस पर कहा कि, मेरा विवाह पहिले ही हो चुका है। तू क्वाँरे लक्ष्मण के पास जा।

अतः वह उसके पास गयी किन्तु लक्ष्मण ने इस कारण से उससे विवाह करना इनकार कर दिया कि, मैं राम का दास हूँ और यह कहते हुये कि राम की स्त्री बड़े पेट वाली वृद्धा है, अतः तू उसी के पास लौट कर जा। वह तुझ से विवाह कर लेगा।

जैसा कुछ हो कथा के अनुसार जब रावण सीता को मिला-तब वह सुन्दर, किन्तु वृद्धा थी। वृद्धा होते हुये भी जब रावण आनन्द लेता हुआ उसके अंगों प्रत्यंगों की प्रशंसा करने लगा था- तब उसने अपनी अवस्था क्यों छिपायी?

पाठक तनिक इस पर विचार करें। क्या एक सती दैवी शक्ति की कथा ऐसी ही है। तत्पश्चात क्या हुआ। रावण ने अपने आपको प्रकट किया। (कपट भेष उतार दिया का तात्पर्य है पूर्ण परिचय दिया) और सीता से उसके साथ लंका को चलने को कहा। सीता ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। रावण ने क्षण भर मे हाथ से उसके बाल पकड़े तथा दूसरे हाथ से उसकी जांघो को पकड़कर उठा लिया और अपनी जांघो पर बैठाकर उसे ले गया वह चिल्लाती है। इस प्रकार कथा चलती है।

मेरा भौतिक शरीर कहीं-किन्तु मन तुम्हारे साथ

द्वितीय ध्यान देने योग्य बात यह है, कि रावण को दो श्राप दिये गये थे। प्रथम यह कि यदि वह किसी स्त्री को बिना उसकी आज्ञा के छुयेगा। तो वह भस्म हो जायेगा। द्वितीय यह कि उसके सिर के सहस्त्रो टुकड़े हो जायेंगे।

तामिलनाडु का कवि कम्बा लिखता है कि, रावण सीता को बिना अपने हाथों में स्पर्श किये जिस स्थान पर वह खड़ी थी उस स्थानसहित उसे ले गया।

इन श्रापों के प्रमाणस्वरुप द्वितीय श्लोक मे कहा गया है कि, रावण वास्तविक सीता को नहीं ले गया था, अपितु वह उसकी मायावी प्रतिमा मात्र ले गया था- किन्तु वाल्मिकि की मौलिक पुस्तक मे स्पष्ट वर्णन है कि, रावण सीता को अपनी गोद में दबाये हुये उसके शरिर को पूर्णतया स्पर्श करते हुये ले गया।

यदि इन श्रापो मे कोई शक्ति होती-तो सीता को ले जाते हुये रावण का शरिर और सिर मिट्टी मे मिल जाता, किन्तु उसके प्रति कोई घटना न घटी। वह लंका में सुरक्षित पहुँच गया था और वहाँ पहुँच कर उसने सीता को अपने महल के चारों ओर घुमाया। वहाँ भी रावण के प्रति कोई दुर्घटना न हुई। तब श्राप का क्या अर्थ है?

कलकत्ता विश्वविद्यालय के सदस्य तथा बंगाली इतिहास के अनुसन्धान के प्रतिष्ठित विद्यार्थी रायसाहब दिनेशचन्द्र सेन डी. ए. इस पर यह लिखते है कि, मेरा यह निर्णय है कि इस बात मे कोई सत्यता नही है कि रावण सीता को बलात हर ले गया। मेरे इस निर्णय पर कट्टर हिन्दू धर्मावलबी व्यक्ति क्रोध से भड़क सकते हैं- किन्तु इस पर मैं अपना दृष्टिकोण परिवर्तित नही कर सकता। यदि पाठक इस पुराण अर्थात रामायण की साहित्यिक सुन्दरता का पर्दा हटा दें-तो उसमे का ढांचा मात्र रह जायेगा।

लंका में सीतासहित बैठे हुये रावण ने उससे कहा, "सीते! लज्जा न करो। हमारा तथा तुम्हारा मिलाप दैवी योजनानुसार है। इसका स्वागत सम्पूर्ण ऋषि और मुनि करेंगे।" इस पर सीता ने उत्तर दिया, कि "तुम मेरे शरीर का यथेच्छा भोग कर सकते हो। मुझे अपने शरीर की चिन्ता नहीं।"

रावण को मार कर सीतासहित लौटते हुये राम ने सीता से पूछा, कि "तुम रावण के संरक्षण में बहुत दिनों तक रही हो। उसने बिना तुम्हें स्पर्श किये तथा बिना तुम्हारे साथ सम्भोग किये, तुम्हें कैसे छोड़ा होगा।" सीता ने उत्तर दिया "मैं क्या कर सकती थी। मैं एकाकी थी। दूसरे, मैं अबला स्त्री हूँ। वह शक्तिशाली है। मेरी स्वेच्छानुसार कोई काम नहीं हुआ है। मेरे शरिर के सिवाय मेरा मन तुम्हारे साथ था और रहेगा।"

उसने कोई यथार्थ बात नहीं बताई। वह बगले झांक रही थी और उत्तर दिया, "मेरा अपने शरीर पर कोई अधिकार न रह गया था। किन्तु मैं अपने मन की पवित्रता के सम्बन्ध में तुम्हें विश्वास दिला सकती हूँ।"

इन सुसज्जित शब्दों के साथ उसने उत्तर दिया। अन्त में अयोध्या आ जाने पर राम ने सीता से उसकी पुर्ण पवित्रता की शपथ ग्रहण करने को कहा। उसने ऐसा नहीं किया-किन्तु वह पृथ्वी में समाकर अलोप हो गयी थी। दुसरे शब्दों में उसने आत्महत्या कर ली थी।

राम के अनुचर निन्दनीय हैं।

जहाँ तक सीता के पति राम का सम्बन्ध है। वह पाखंडी-कपटी, विश्वासघाती, स्त्रीवत-निर्बल, किंबहुना मेहरा और झूठा था।

उसका भाई लक्ष्मण उपद्रवी व प्रजापिड़क था-जिसने अपने पिता को मारने का साहस किया था। वह लुच्चा व लम्पट था-जो गद्दी प्राप्त करने हेतु कोई भी कार्य करने में न हिचकिचाया।

साठ वर्ष की अवस्था के बाद भी उसका पिता भ्रष्ट था। उसने अपने पुत्रों को समान रुप से प्यार न करते हुये एक को प्यार किया तथा दूसरे से घृणा की।

राम की माता अपने पति के प्रति कोई प्रेम नहीं करती थी। यही बात सुमित्रा के विषय में थी, जब दशरथ मृत्युशैया पर लेटा था- तब निकट ही कौशल्या और सुमित्रा गम्भीर निद्राविभूति थी। उसकी मृत्यु से शोकाकुल होते हुये व्यक्तियों द्वारा वे जगाई गई। इससे स्पष्ट है कि वे अपने पति के प्रती कितनी उदासीन रहती थी।

सुग्रीव व विभिषण जिन्होंने अपने अपने भाईयों को धोके से मरवा कर उनके राज्य को कपटछल तथा धोके से छीन लेने के घृणित उद्देश्य से राम से मित्रता की, विश्वासघाती व आलसी थे।

राम की सम्पूर्ण मन्डली में इस प्रकार के धूर्त, ठग, अधर्मी, विश्वासघाती तथा भ्रातद्रोही भरे पड़े थे -तो भी वे देवता मान गये हैं। किन्तु रामायण की कथा के अनुसार इन कथित दैवीशक्ति के विरोधियों (सुग्रीव आदि सभी) को सत्यवादी और सभ्य कह कर उनकी प्रशंसा की गई।

रावण की महानता

रावण की वीरता की प्रशंसा सर्वव्यापी थी, उसके महल की भव्यता और विशालता की प्रशंसा हनुमान ने की है। उसने अपने शयनागार में सुन्दर महिलाओं के मध्य शयन करते हुये रावण की उपमा तारागणों के मध्य विचरण करते हुये चन्द्रमा से दी है। हनुमान ने कहा है कि, ये सभी स्त्रियाँ रावण की सुन्दरता, बुद्धिमत्ता व वीरता से आकर्षित होकर स्वेच्छापूर्वक उसके पास आ गई थी। उसमें से कोई भी स्त्री बलात नही लाई गई थी। कहा गया है, कि हनुमान स्वयं इस बात में विचार विमग्न हो गया था, कि यदि सीता अपने विवाह के पूर्व रावण द्वारा ले जाई जाते तो यह अति प्रशंसनीय होती।

वाल्मिकी ने रावण के विषय में कई स्थलों पर उसकी प्रशंसा के पूल आसमान में बांध दिये हैं। यथा :- रावण एक महान विद्यार्थी था। उसने कई घोर तपस्यायें की थी। वह वेदों का ज्ञाता अपनी प्रजा तथा सम्बन्धियों का सत्य पालक था। वह एक वीर योद्धा था व शक्तिशाली व हृष्टपुष्ट था। निष्कपट-भक्त, ईश्वरकृपापात्र और वरदानी था।

राम की भांति रावण को कहीं तुच्छ नहीं बताया है। जिस प्रकार राम ने सूर्पणखा के अङ्ग भङ्ग रूप बिगाड़ दिया था।- उसी प्रकार रावण भी सीता के साथ व्यवहार कर सकता था किन्तु इसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप ऐसा करने का कोई भी विचार वह अपने मन में नहीं लाया। रावण ने सीता को अपनी भतीजी के संरक्षता में अशोक बन मे रखा था। वह बहुत भला और सज्जन पुरुष था। वाल्मीकि ने कहा हैं, "रावण ब्राह्मणों को यज्ञ करने से तथा उन्हें सोम रस पीने से रोकता था।"

ऐसा सज्जन रावण तथा उसके लोगों को इस कारण-मात्र से कि वे ब्राह्मणों के शत्रु थे, दुष्ट राक्षस कहा गया था।

वाल्मिकी रामायण

रामायण की कथा कदापि सत्य नहीं है, यही विचार कई धर्म धुरन्धर तथा बुद्धिमानों द्वारा व्यक्त किये गये हैं।

वाल्मिकी ने स्वयं कहा है कि, राम न तो ईश्वर था, न उसमें कोई स्वर्गीय शक्ति थी।"

ऐसे स्थिति में हिन्दू रामायण तथा उसमें वर्णित आर्य-पात्रों को महत्त्वपूर्ण समझते हैं।

ऐसा क्यों ताकि ब्राह्मण लोग, ब्राह्मणों के अतिरिक्त दूसरे मनुष्यों से सम्मान पाने का प्रचार कर सके। कुछ भी हो, हम रामायण की निम्नांकित बातों का पुनर्निरीक्षण करना चाहिये-

१ - क्या राम स्वर्गीय शक्ति है तथा क्या वह साधारण मानव मात्र से विशेष है?

२ - क्या राम सत्यवादी है?

३ - क्या वह वीर योद्धा है?

४ - क्या राम एक बुद्धिमान पुरुष है? क्या वह नीच वर्णों से उच्च है?

५ - क्या सीता सच्चरित्र स्त्री है?

६ - क्या सीता में साधारण स्त्रियों से न्यूनतम साधारण गुण है? क्या रावण दुष्ट है?

७ - क्या रावण सीता को हर ले गया?

८ - क्या रावण ने सीता का सतीत्व बिगाड़ा ?

भागवत में वर्णित विष्णु के सम्पूर्ण अवतारों में से -जो रावण राक्षस मारने के उद्देश्य से विष्णु का अवतार हुआ है- वही वैशवती राम है। तुलना किजिये।

विष्णु के अवतार

१ - मत्स्य अवतार, २- कच्छप अवतार, ३- शूकर अवतार, ४- नृसिंह अवतार, ५-वामन अवतार, ६-परशुराम अवतार, ७- राम अवतार, ८-कृष्ण अवतार, ९-बलराम अवतार।

यह वर्णन किया गया है कि, ये सभी नौ अवतारों का अर्थ ब्राह्मणों के हित में उनके शत्रु प्रसिद्ध राजाओं (शूद्र एवं महाशूद्र राजाओं) का संहार करना है। इन नौ अवतारों में से ब्राह्मणों ने राम के अवतार को अपनी रामायण से कल्पित कथा का आधार बनाया है। रामायण की यह कथा नम्बियान्दर नम्बी तथा दूसरे शैवित सन्तों पर आधारित "पैरिया पुराण" के समकक्ष है।

सीता-मृदु के रामकथा यह 'पेरिया पुराण' ईश्वरभक्ति हेतु सैविती द्वारा इसी सदी में पूर्व प्रकाशित वैष्णवी सन्तों की कथा है।

किन्तु रामायण की कथा सैविती से स्कन्द-पुराण से ली गयी है। जिसका नाम परिवर्तित कर 'रामायण' रख दिया गया है। स्कन्द पुराण में आर्यों द्वारा कहे जानेवाले द्रविड़-राक्षसों (शूद्रों) के प्रति दर्शाई गयी घृणा की अपेक्षा रामायण में उन्हें (आर्यों) को अत्याधिक मानेजाने का दृष्टिकोण अपनाया गया है।

रामायण की अपेक्षा स्कन्द पुराण का निर्माण बहुत समय पूर्व हुआ। इसी कारण से वह केवल एक व्यक्ति द्वारा लिखी गई थी।

चूंकि रामायण बहुत समय पश्चात लिखी गई, वह भी भिन्न भिन्न लेखकों द्वारा। फलस्वरूप कई स्थलों पर भिन्न भिन्न विचार एक दूसरे लेखक से विभिन्न प्रकट किये गये है। रामायण के प्रमुख पात्र राम और सीता के विषय में दिये गये वर्णनानुसार उन्हें चरित्रहीन बताया गया है।

छः वर्ष की अवस्था में ब्याह हो जाने तथा पांच वर्ष की अवस्था में किसी स्थान पर छिपकर 'ताड़का' का वध कर डालने से बालक राम की कथा प्रारम्भ होती है।

उपरोक्त दो घटनाओं के कारण बालक राम को प्रकाश में लाने का कोई कारण नहीं रहा है। जब राम अठारह वर्ष का था-तब उसके पिता दशरथ ने उसे अयोध्या का राज्य देने के तिलकोत्सव समारोह मनाने के षड़यंत्र को गुप्त रूप से उससे मिलकर रचा था। यद्यपि लोग भलीभांति जानते थे। कि दशरथ द्वारा कैकेई को दिये गये वरदान या वचन के अनुसार कैकेई तथा पुत्र राजगद्दी का कृतिम अधिकारी है।

हमारा यहां पर दशरथ के कपट पूर्ण षड़यंत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि दशरथ को न उत्तम व्यक्तित्वयुक्त और न कोई सैद्धान्तिक-पुरुष कहा गया है। यह, हमारा सम्बन्ध उस राम से है जिसको निर्दोषचरित्र युक्त कहा गया है तथा जिसके आदर्शों का अनुसरण सर्वसाधारण द्वारा सच्चा-वीर योद्धा समझकर किया जाना चाहिये-किन्तु रामायण वक्ताओं तथा धर्म के प्रमुख ठेकेदारों, ब्राह्मणों ने इस समस्या को सन्तोषजनक ढंग से नहीं सुलझाया है।

श्री सी. राजगोपालाचार्यजीने अंग्रेजी पुस्तक 'सम्राट का पुत्र' में संतोष जनक ढंग से उपरोक्त त्रुटियों का वर्णन किया है।

अतः हम केवल इस निर्णय पर पहुँचते है- कि, "राम केवल एक साधारण मनुष्य है तथा मनुष्य से भी हीन है। निम्न लिखित तथ्य प्रकट करते हैं" :-

कि, राम शूर वीर नहीं अपितु कायर है। उसने सुशील तथा लज्जावती स्त्रियों को न केवल छेड़ा-बल्कि उन्हे मार भी डाला है। उसने बिना किसी प्रामाणिक कारण के ताड़ के पेड़ो की ओट मे छिप कर बालि को मारा, वह भी जब बाली दूसरे व्यक्ति से लड़ने मे संलग्न था।

रामायण की सम्पूर्ण कथा मे यह कही नहीं प्रकट होता है कि, राम कोई विवेकशील मनुष्य था।

दशरथ ने राम को निम्नलिखित लालचपूर्ण परामर्श किया था कि :-

हे राम! मैंने अपनी मूर्खतावश अपना राज्य कैकेई को देने का वचन दे दिया है। इसी के दुष्परिणाम-स्वरूप मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध तुम से बनवास जाने को कह रहा हूँ- किन्तु मैं तो अपने वचनों के अनुसार ऐसा करने को बाध्य हूँ- परन्तु तुम ऐसा करने को बाध्य नहीं हो। अतः मेरे द्वारा बनवास दिये जाने पर भी तुम यह घोषणा कर दो कि, मैंने अपने पिता को गद्दी से उतार दिया है। अब मैं राज्य करुंगा"।

दशरथ द्वारा राम को ऐसा परामर्श देने पर तथा यह जानते हुये कि, यह उचित नहीं है। राम ने कहा, "यदि मैं ऐसा करता हूँ - तो जब प्रजा वास्तविकता समझ लेगी- तो वह मेरे प्रति विद्रोह कर देगी। अतः उसने अपने पिता से (पुनः स्पष्ट) कहा कि, तुम राज्य करते रहो और मेरा राजतिलकोत्सव स्थगित कर दो।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि, राम बुद्धिमान नहीं था-बल्कि वह पदलोलुप था। आगे और सुनिये जब 'मारीच' कपटभेष धारण कर स्वर्णहिरण बन कर राम, लक्ष्मण और सीता के समक्ष दण्डक-वन से होकर निकला-तब उस हिरण के लिये सीता की प्रार्थना पर उसने पकड़ना चाहा। यद्यपि हिरण के पकड़ने के फल स्वरूप भविष्य की दुर्घटना के विषय में लक्ष्मण ने राम को संकेत किया था- तो भी वह उसके पिछे उसे पकड़ने चला गया।

इन बातों से स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि, राम के मस्तिष्क नहीं था। हम किस कारण मे यहां उपरोक्त बातें करते हैं? इन प्रयोजन से कि हमें देखना है कि, क्या रामायण और राम हमारी श्रद्धा तथा सम्मान के पात्र है और यह बताने के लिये कि किस प्रकार ब्राह्मण ने ब्राह्मण न कहे जानेवाले सम्पूर्ण लोगों को धोखा दिया है, ठगा है, बेवकूफ बनाया है तथा अपने तुच्छ स्वार्थी

की पुर्ति के लिये अपनी स्थिति और अज्ञानता को अदभुत ढंग से वर्णन किया है। वे आज भी इस वैज्ञानिक सभ्य युग में वही खेल (रामलीला) तथा नाटक खेल रहे है। हम चाहते है कि लोग इन त्रुटियों के सम्बन्ध में रामायणकर्त्ताओं से प्रश्न करें।

आओ! अब हम लोग सीता की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें। सीता का जन्म ही अनिश्चित तथा सन्देहयुक्त है अर्थात उसके मातापिता का ही पता नहीं है। वह जंगल में पड़ी पाई गई थी। इस संबन्ध में कई श्लोक है।

वाल्मिकि ने वर्णन किया है कि सीता, ने स्वयं कहा था कि, ज्यों ही मैं पैदा हुई मुझे बन में फेंक दिया गया था। राजा जनक ने मुझे पा लिया और मेरा पालनपोषण किया। तरुणावस्था पा चुकने के पश्चात मेरे साथ लगे हुये उपरोक्त कलंक के कारण किसी भी राजकुमार ने मेरे साथ विवाह करने की इच्छा न की। ढूंढने पर सीता के लिये कोई योग्य वर न मिल सकने के कारण राजा जनक अपने मित्र विश्वामित्र के पास इस सम्बन्ध में गया। विश्वमित्र ने इस पांच वर्ष के राम का विवाह इस पच्चीस वर्ष की सीता के साथ करा दिया और सीता ने इस छोटे तथा अयोग्य वर (पति) पर कोई आपत्ति नहीं की।

वाल्मिकि रामायण के अतिरिक्त दूसरी रामायण में कहा गया है कि राम तथा सीता का विवाहसंस्कार हो जाने के पूर्व जनक की स्त्री स्वयंवर स्थल पर आई और वहाँ एकत्रित जनसमूह के सामने चिल्ला कर घोषणा की, कि "सज्जनों! आप लोग वहां उपस्थित रहते हुये भी किस प्रकार यह हेय तथा घृणित उत्सव (स्वयंवर) देख रहे हो।"

जैसे ही सीतासहित सब बराती अयोध्या लौट कर गये। भरत ने सीता से घृणा की। वाल्मिकी ने कहा है कि सीता ने स्वयं इस बात को कहा था।

बनवास जाने के पहिले जब राम ने सीता को अयोध्या में ही रहने तथा जिस प्रकार भरत सीता से प्रसन्न रहे-वैसा भरत के प्रति व्योहार करने की सीता को परामर्श दिया, तब उसने राम को असभ्यता तथा घमण्डपूर्वक उत्तर दिया। "मुझे क्या करना चाहिये भरत मुझ से घृणा करता है। मैं उसके साथ कैसे रह सकती हूँ" सीता के इन शब्दों का वर्णन उसके ही शब्दों में वाल्मिकी करते हैं- हे राम! तुम वीर योद्धा नहीं, कायर तथा अशक्त हो। तुम मुझ से भरत द्वारा व्यभिचार कराना चाहते हो। मानों मैं वैश्या... हूँ। ताकि तुम अयोध्या का राजा बनने का लाभ उठा सको।" उस समय राम सत्तरह वर्ष का था।

वाल्मीकी द्वारा श्लोकों के रुप में कौशल्या के मुख से निम्न तथ्य वर्णन

दिया गया है। जब राम वन जाने के लिये अपनी माता कौशल्या से आज्ञा लेने गये- तब कहती हैं। "हे राम! मैं तेरे पिता अर्थात अपने पति और अपनी सौत कैकेई द्वारा अपमानित की गई हूँ। मैंने इस सत्तरह वर्षों मे बहुत कष्ट सहा है, किन्तु मैं तुम्हारे लिये मरने को तैयार हूँ। से हम निर्णय निकालते हैं, कि उस समय राम सत्तरह वर्ष का था।

जब विश्वमित्र ने दशरथ से प्रार्थना की कि, राम को ताड़का का वध करने के लिये मेरे साथ भेज दिजिये। तब दशरथ ने उसे निम्न उत्तर दिया, हे ऋषि, मेरी गोद मे खेलता हुआ राम अभी शीशु है। अभी उसका मुण्डन संस्कार भी नही हुआ है। मै छोटे शिशु को युद्ध आदि कार्यों के लिये कैसे भेज सकता हूँ। इससे स्पष्ट है कि, विवाह के समय राम केवल पाँच वर्ष का था।

इससे स्पष्ट है, कि पूर्णयौवनावस्थाप्राप्त सीता तथा राम जैसे शिशु के साथ विवाह करने के लिये सहमत हो गई। यही कारण है, कि सीता, राम के साथ असभ्यतापूर्वक व्यवहार करती थी।

और भी वनवास जाने के पहिले जब रामने सीता से बहुमुल्य वस्त्र तथा आभूषण त्यागने व तपस्वी के समान बल्कल चीर धारण करने को कहा, तब उसने अस्विकार कर दिया। तब उसकी सास कैकेई ने राम को तापस भेष में देखकर, अपनी बहू सीता से कहा "पहिले से पहिने हुये बहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषणों के ऊपर तापसोचित वस्त्र पहिन लो।"

जब राम ने शिकार करने के लिये कपटी हिरण का पिछा किया और उसे मार डाला, तब हिरण "हा लक्ष्मण: हा लक्ष्मण:" चिल्लाया। तब सीता ने लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुये कहा कि, "मुझे ऐसा लगता है कि राम के प्रति कोई दुर्घटना हो गई है, शिघ्र जाओ और देखो क्या बात हैं।" इस पर लक्ष्मण ने उसे उत्तर दिया- "हे माता! यह उसी कपटी हिरण का शब्द है। चिन्ता न करो, किसमे शक्ति है, जो राम का कुछ भी अहित कर सके, वह बहुत शक्तिशाली है, मेरे भाई ने उस हिरण को मार डाला होगा और वही हिरण इस प्रकार चिल्ला रहा है। लक्ष्मण ने अपनी यथाशक्ति तथा योग्यतानुसार उत्तर दिया और सीता को समझाया-किन्तु वह उसके समझाने पर सन्तुष्ट न हुई और सीता ने कहा, "अरे पापी, क्या तू समझता है कि, राम मृत्यु के पश्चात तू मेरे साथ सम्भोग का आनन्द ले सकता है? क्या भरत ने इसी उद्देश्य से तुझे मेरे साथ वन में भेजा है कि भरत और तू स्वयं मुझे अपनी स्त्री बनायेगा?" यह सुनकर लक्ष्मण शिघ्र ही राम की सहायता करने चला गया।

जब हम लोग सीता से सम्बन्धित चरित्र का प्रकाश करते हैं- उस समय हमारा उद्देश्य सीता का अपमान करना नहीं है। पाठक इस पर ध्यान दें। यह बात गम्भीरतापुर्वक कही जाती है।

हम विशेषतया रामायण में वर्णित सीता की स्थिति पर विश्वास नहीं करते है कि कथित सीता कल्पित सीता है। कल्पना-मूर्खता पूर्ण वर्णन पर आधारित है। ध्यान दिजिये कि, रामायण लेखक को यह लिखने में तनिक भी कष्ट का अनुभव नही हुआ कि सीता, सती वीराङ्गना बुद्धिमती तथा अपने सतीत्व की रक्षा करने वाली थी। दुसरी ओर यह भी वर्णन पाया जाता है की, सीता एक चरित्रहीन स्त्री थी। इससे भिन्न रामायण न केवल कल्पितकथा है बल्कि उसका आधार ही काल्पनिक तथा असम्भव पृष्ठभूमि है।

रामायण में सीता का वर्णन साधारण स्त्री की भांति किया है। रामायण के अनुसार सीता के जनम से लेकर, जनक द्वारा उनके पृथ्वी में पाये जाने, पृथ्वी में समा जाने तथा आत्महत्या कर लेने तक हम उसमें केवल साधारण स्त्रीमात्र की ही विशेषतायें पाते हैं। हम उसमें कोई स्वर्गीय व उच्च मानवीय गुणों को नहीं पाते है। अतः रामायण की सीता एक साधारण स्त्री है।

यह सुनकर उसने अपने सतीत्व को प्रमाणित करने के लिये अग्निकुण्ड में प्रवेश किया कोई आश्चर्यजनक बात नही है- क्योंकि हम आज के युग में मन्दिरो में मनाये जानेवाले त्योहारों के अवसर पर साधारण मनुष्यों को भी आग पर चलते हुये देखते हैं। न केवल वेश्यायें-बल्कि लुच्चे व दुष्ट प्रकृतिवाले आज भी आग में चलते हुये देखे जाते है।

हम यदि वाल्मिकी रामायण का सतर्कतापुर्वक अध्ययन करें तो, हम उस समय सीता को तीन मास की गर्भवती पाते हैं। अब हम इसकी व्याख्या करेंगे, कि वह तीन मास की गर्भवती कैसे थी। जैसे ही सीता की अग्निपरीक्षा का कार्य समाप्त हो गया। राम, सीता को अयोध्या ले गया। एक मास तक अयोध्या का राज्य कर चुकने के पश्चात एक दिन राम और सीता दोनो प्रेमीप्रेमिका की भांति एक पुष्प वाटिका में बैठे हुये आनन्द से समय व्यतीत कर रहे थे कि अचानक राम की दृष्टि सीता के पेट पर पड़ी। जो कि बड़ा और उभरा हुआ था। राम ने तुरन्त सीता से पूछा कि, "तुम्हारा पेट इतना क्यों है?" इस पर सीता ने उसे उत्तर दिया "यह चार या पाँच मास का गर्भ है" यह सुनकर राम चिन्ता और दुःख में शिघ्र वहां से चला आया और उसे जंगल में छोड़ देने पर विचार करने लगा। वहां से उठकर वह अपने महल के सामने आँगन में बैठा हुआ पाया गया। तब महल के उजड्ड तथा मूर्ख लोगों ने प्रहसन

पूर्ण वार्तालाप करते हुये उसकी मनोदशा को परिवर्तित करने का प्रयत्न किया तो भी राम उसी स्थिति में बना रहा इस बात को उसके भाईयों ने भी देखा तो वे उसके उदास होने के कारण का पता लगाने लगे। इस राम ने अपने भाईयों से कहा कि "लोग कह रहे हैं कि राम का सीता के साथ रहना अपमानजनक है।" ऐसा सुनकर राम ने तुरन्त अपने भाई लक्ष्मण को बुलाया और उससे कहा कि, वह सीता को दूसरे दिन प्रातःकाल जंगल में किसी अज्ञात स्थान में छोड़ आये। राम के कथनानुसार ने ऐसा ही किया अर्थात सीता अकेले जंगल में छोड़ दी गई। लक्ष्मण ने लोकापवाद के भय से द्वारा सीता को जंगल में छोड़ देने की आलोचना की, किन्तु सीता ने उत्तर दिया की आलोचना करना उचित नहीं है- "क्योंकि वह गर्भ पाँच मास का है, यह मेरे कर्म का दोष है।" सीता ने लक्ष्मण को पेट भी दिखाया।

अतः हम इस बात पर विश्वास नही कर सकते कि सभी स्त्रियाँ जो कि, आग पर चलने की बात करती है, सत्यव्रती व पतिव्रता हैं या उनमें कोई स्वर्गीयशक्ति है। अतः सीता एक साधारण स्त्रीमात्र है।

अतएव सीता-सदृश्या एक साधारण स्त्री अधिकतम सौ वर्ष या इससे अधिक दस बीस वर्ष और जिवित रह सकती है- यदि वह ह्रष्टपुष्ट तथा स्वस्थ है। किन्तु रामायण के ढूंढने से पता चलता है, कि सीता सहस्त्रों वर्ष जिवित रही।

तत्पश्चात राम की कथा के विषय मे विचार करें। रामायण के अध्ययन करने से पता चलता है कि, राम सहस्त्र वर्ष तक जिवित रहा- किन्तु हम लोग समझ या कह सकते कि, यह सीता, राम के साथ इतने दीर्घकाल तक कैसे जीवित रहा- किन्तु हम लोग समझ या कह सकते कि, यह सीता, के साथ इतने दीर्घकाल तक कैसे जिवित रही। इतने दीर्घकाल तक जिवित बने रहने का वरदान उसे किसके द्वारा दिया गया! वह उसने समय तक जिवित रहने योग्य कैसे हो गई? हम रामायण मे इन प्रश्नों का उचित उत्तर न पा सकें।

इन बातों को छोड़कर अब हम रामायण के उस अंश पर विचार करेंगे-जहां पर सीता व रावण का सम्बन्ध है। वहां हम सीता में एक सती स्त्री की भांति शुद्ध रुप से कोई विशेषतायें नहीं पाते हैं।

यदि हम रावण के प्रति निर्दिष्ट इस अभियोग का मामला, कि उसने सीता का सतीत्व भ्रष्ट किया। वह उसे छल से ले गया। खुफिया विभाग के किसी अधिकारी को अनुसन्धान के लिये सौंप दे तथा खुफिया विभाग की रिपोर्ट किसी निष्पक्ष न्यायाधीश के समक्ष निर्णय के लिये प्रस्तुत की जावे और यदि

राम को अभियोगी तथा रावण को अभियुक्त समझकर राम की सुविधानुसार ही मामले का निर्णय दिया जाय-तो हमे पूर्ण विश्वास है कि न्यायाधीश रावण के पक्ष में ही अपना यह निर्णय देगा कि रावण निर्दोष तथा निष्कलंक है- उसे डरा व धमका कर निष्प्रयोजन फांस दिया।

और भी यदि कोई शिकारी किसी शेर को प्रलोभन देकर फासने के उद्देश्य से एक मोटे-ताजे हिरण को किसी पिंजड़े में बन्द कर के पिंजड़े को जंगल में रख दे वह यदि कोई शेर पिंजड़े मे घुसा। खुफिया विभाग की उपरोक्त यही रिपोर्ट होगी।

रामायण व महाभारत काव्यों पर जवाहरलाल नेहरु के विचार

(नई दिल्ली दिनांक १४.१५ दिसम्बर सन १९५४ ईस्वी के दि मेल नामक समाचारपत्र से उद्धृत।

प्रधानमन्त्रीने तामिलनाडु मे रामायण व हास्यपूर्ण व्यंगात्मक खेले जानेवाले नाटकों के विषय में बोलते हुये कहा है, कि "दक्षिण मे ये आन्दोलन न केवल भाषा बल्कि जीवन के दूसरे क्षेत्रो मे, भी उत्तरी भारत के लोगो के अनुचित उत्पीडन तथा जबाव के दुष्परिणाम स्वरुप है। यह यहाँ के मनुष्यो के हृदयो मे बना हुआ स्थायीभाव है, जिसे गम्भीरतापूर्वक समझना चाहिये और हिन्दी के वे नेता जिन्होने तामिलनाडु के लोगों तथा उनकी भाषा से घृणा की है। हिन्दी तथा राष्ट्र के मूलसहायक नहीं है।" प्रधानमन्त्री ने कहा कि, "यदि हम कोई गलत कदम उठाते हैं- तो हमारी परेशानियाँ बढ़ जायेगी। स्थायीभाव पैदा हो जाता है- तो उसका प्रतिघात बहुत बुरा होता है।"

श्री नेहरु ने तामिलनाडु मे रामायण पर व्यंगात्मक हास्यपुर्ण ढंग से खेले जानेवाले नाटक की ओर संकेत किया और कहा, हमे खोज करना चाहिये कि इन आन्दोलनों की पृष्ठभूमि क्या है? रामायण पर खेले जाने वाले ये हास्यपूर्ण व्यंगात्मनाटक श्रोताओं तथा द्रष्टा के समक्ष इस बात के उदाहरणस्वरुप है कि उत्तरी भारत के लोगों ने भारत के लोगों को न केवल, आज, बल्कि सहस्त्रो वर्ष पराजित किया। सताया और यदि उन्हे अवसर मिले तो ऐसा करते रहेंगे।

महाभारत की एक कथा

जो कुछ उन्होंने उड़ीसा मे देखा, उससे बहुत दु:खी हुये।

अपने भाषण को चालू रखते हुये श्री नेहरु ने कहा- "दो दिन पूर्व मै उड़ीसा

मे था। वहां पर मैंने 'एकलव्य' के विषय में एक नाटक देखा।'' यह महाभारत की एक कथा है कि, गरीब के पुत्र एकलव्य ने क्षत्रियों के धनुर्विद्या के शिक्षक गुरु 'द्रोणाचार्य' से बाण विद्या सीखने की सहायता मांगी। गुरु द्रोणाचार्य ने उसे बाण विद्या सीखाने से इन्कार कर दिया- क्योंकि वह क्षत्रिय पुत्र नही था- किन्तु एकलव्य द्रोणाचार्य की मिट्टी की प्रतिमा बना कर और उसे गुरुसदृश्य समक्ष कर बाण विद्या का अभ्यास करने लगा। यहांतक कि वह इस विद्या में इतना निपुण हो गया, कि वह अर्जुन की अपेक्षा अधिक विख्यात हो गया। जब गुरु द्रोणाचार्य को ज्ञात हुआ, कि वह मेरा शिष्य अर्जुन से भी धनुर्विद्या में श्रेष्ठ (दक्ष) हो गया है- तब उसने उसे बुलाया और उससे गुरु दक्षिणा मांगी- क्योंकि उसने उसकी प्रतिमा से बाण विद्या सीखी थी। द्रोणाचार्य ने एकलव्य से उसके हाथ का दाहिना अंगुठा मांगा- जिसे उसने उसे दे दिया। महाभारत में एकलव्य की यह कथा अति मर्म स्पर्शी है।"

उन्होंने कहा कि, मैंने इस घटना के विषय में कुछ विचार न ही किया। क्योंकि इस घटना से मेरे हृदय में गहरा आघात हुआ। उड़ीसा में रहने वाली(महाशूद्र) जाति के लोगों ने मुझे बताया, कि इस प्रकार हमें कितना सताया गया है। हमें इन बातों की प्रतिक्रियाओं से सावधान रहना चाहिये। वास्तव में है कि, इतिहास एक पक्ष के लोगों ने अर्थात ब्राह्मणो ने लिखा है। लोग आज भी अज्ञानतावश उन्हीं घटनाओं के आधार पर कविता करते या लेख लिखते हैं। हमें यह न सोचना चाहिये कि, ये कथायें दूसरो द्वारा बनाई गई हैं।

जब मैं गम्भीरतापूर्णक विचार करता हूँ तब मेरा क्रोध बढ़ जाता हैं, कि ब्राह्मणों ने लिखा है। लोग आज भी अज्ञानतावश उन्हीं घटनाओं के आधार पर कविता करते या लेख लिखते हैं। हमें यह न सोचना चाहिये कि, ये कथाये दूसरों द्वारा बनाई गई है। जब मैं गम्भीरतापूर्वक विचार करता हूँ तब मेरा क्रोध बढ़ जाता हैं, कि ब्राह्मणो ने किस प्रकार दुसरे लोगों को अपने बराबर होने देने में रोक लगा दी है।

इतिहासकारों का दृष्टिकोण

विष्णु एक लोकप्रिय पूज्य वीर, क्षत्रियों का गुरु व आर्य जाति को शिक्षा देने के लिये समय समय पर अवतार धारण करनेवाला और उन्हें दूसरी जातियों पर विजय दिलाने वाला था।

-आर्यन रुल इन इण्डिया पृष्ठ ३२ (लेखक श्री हावेल)

✤ ✤ ✤

द्रविड लोग उत्तरी और दक्षिणी भारत के भागों में चार हजार वर्ष स्थायी रूप से रह रहे थे। उस समय सुन्दर सुन्दर सुडौल शरिरवाले आर्य भारत के पश्चिमोत्तर दिशा में स्थित हिन्दकुश पर्वत को पार करते हुये अफगानिस्तान से होकर यहाँ (भारत में) घुस आये। सम्भवतः द्रविडों ने इन लोगों को यहा घुसने देने से रोका और युद्ध किये। ये युद्ध में केवल दो राष्ट्रों-बल्कि दो सभ्यताओं के मध्य हुये।

-आऊट लाईन आफ एन्शेण्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड सिविलिजेशन पृष्ठ २१,२२ (लेखक श्री रमेशचन्द्र मजूमदार एम.ए.पीएच.डी)

✤ ✤ ✤

रामायण और महाभारत मे आर्यों की, विजय एवं राजनैतिक युद्धों का वर्णन करते हैं।

मैं नही सोच पाता हूँ कि इन कहानियों की महत्ता से वस्तुता मेरा सम्बन्ध रहा है। मैं रामायण और महाभारत में वर्णित काल्पनिक अमानुषिक तत्वों की आलोचना करता हुँ- किन्तु 'अरेबियन नाईट' तथा 'पंचतन्त्र' नामक पुस्तकों की भाँति काल्पनिक-दृष्टिकोण से वे परियाप्त सत्य हैं।

-डिस्कवरी आफ इण्डिया पृष्ठ ७५,७६ लेखक जवाहरलाल नेहरु

✤ ✤ ✤

आर्यों के भारत में आने से जातीय और राजनैतिक दो समस्यायें उत्पन्न हो गई। विजेता जाति आर्यों तथा द्रविडों को अपने से अधिक सभ्य समझा। यह इसी विचार ने दोनों को एक दुसरे से अलग कर दिया।

-डिस्कवरी आफ इण्डिया पृष्ठ ६२ (लेखक-श्री जवाहरलाल नेहरु)

✤ ✤ ✤

रामायण आर्यों के दक्षिण में प्रस्थान की कथा है।

-डिस्कवरी आफ इण्डिया पृष्ठ ८२ (लेखक-जवाहरलाल नेहरु)

+++

इसके प्रतिकूल आर्यों को दक्षिण की भाषा, उनकी विचित्रता और कम से कम उनकी सभ्यता को सीखना तथा अपनाना पड़ा।

-सिलेक्टिड वर्क्स वाल्यूम ३ पृष्ठ १० (लेखक श्री आर.जी. भण्डारकर)

+++

इन्द्र और अन्य देवी-देवताओं के पुजारी तथा अनुयायी देवता तथा इन्द्र की पूजा और यज्ञ के विरोधी ही असुर कहलाते थे। ये (द्रविड़) एक अथवा अन्य दल की घृणा के पात्र बन गये। -(ऋग्वैदिक इण्डिया पृष्ठ १५१)

लेखक श्री एम.सी.दास, एम.ए.बी.एड.)

+++

रामायण मादक पेय पदार्थों तथा सुरा, शराब व सोमरस आदि को पीकर अपने को मस्त अथवा प्रसन्न करनेवालों को सुर (देवता) और इन से बचे रहनेवालों (अर्थात उपरोक्त मादक पेय पदार्थों का न पीने वालों) को असुर (राक्षस आदि) बताते हैं।

-हिस्टोरियन्स हिस्ट्री आफ वर्ल्ड, वाल्यूम २, पृष्ठ ५२१